वही लोकसहू हरख्या गहगही ॥ ६ ॥ वांदण आव्या श्रेणिकराय नगरलोक पिण वांदण जाय ।
आपै प्रभुगण धर उपदेश सजलजलद अनुहार विसेस ॥ ७ ॥ अहोभव्य प्राणी तुम्हे सुणौ एमां नव
२ भव दुर्लभगिणउ । आर्यक्षेत्र उत्तम कुलजांणि तेपिण दुर्लभ छैमन आंणि ॥ ८ ॥ धर्मतणी सामग्री
लही श्रीजिन धर्मकरोऊ मही ! इण भवपांमैरिद्धि सम्रद्धि परभवपांमै अविचल सिद्धि ॥ ९ ॥
इम गौतम दीधूं उपदेस सांभलियौ नरनार नरेस । पहिली ढाल एही अटकलौ कहै जिन
हर्षहिवै सांभलौ ॥ १० ॥ दूहा । दानसील तपभावना भेदधरम नाच्यार । इह भव परभव एहथी
लहीयै सुखश्रीकार ॥ १ ॥ दानसील तपमांहि जो चोथो भावभिलंत । तौ कारिजसीझै सहू २
वंछित सकलमिलंत ॥ २ ॥ निश्चलमनराषी करी परिहरिमननोताप । भाव विशुद्ध हीयडै धरी

जपीये नवपद जाप ॥ ३ ॥ अरिहंत १ सिद्ध २ सूरीसवर ३ उवझाया ४ मुनिपत्ति ५ दंसण ६ नांण ७ चरित्त ८ तप ९ इण संधरीये चित्त ॥४॥ ढाल २ अलवेलानी ॥ ए नवपद आराधीये रे लाल आंणी निरमल भाव महाराजारे। एहथीसहू सुखसंपजै रेलाल भवसायरनीनाव म० ॥१॥ ए० नवपदसंघातै जपै रेलाल सिद्धचक्रचउसाल म० । तेलहैमङ्गलमालिका रेलाल जिमलह्यां न्टपश्री- पाल म० ॥२॥ ए०श्रेणिककहै भगवन कहौ रेलाल कुणते न्टप श्रीपाल म० । किमपामी सुपसंपदा रेलाल किमलह्या भोगरसाल म० ॥३॥ ए० गौतम कहै मगधेसनै रेलाल आराध्यौ सिध चक्र म० । रोगगया वंछित लह्यां रेलाल जांणै अभिनवसक्र म० ॥ ४ ॥ ए० श्रीगौतमसुभानै कहौ रेलाल एहनौसङ्क अधिकार म० । साभलिवा मन ऊमह्यौ रेलाल सुणस्यै सहूनरनारि म० ॥५॥ ए०दत्तण

 जो० ॥ २ ॥ रूपसुंन्दरि कहै सांभलिबहिनी कसीयै कंचण जेमरे। कीजै धर्मपरिछा करिने
४ आलन जपीयै एमरे जो० ॥ ३ ॥ धरम२ सऊकोई भाषै पणि अंतर असमांनरे। साकरलूणसरीषा
दीसै काचपाचसमवानरे जो० ॥ ४ ॥ सूरजषजूयै जिवड़ो अन्तर अन्तरराजारंकरे। अरकदूध
गोदूधै अन्तर अन्तरसुष आतंकरे जो० ॥ ५ ॥ चंदन आकधतूरे अन्तर अन्तरविषपीयूषरे। जैन
धर्ममोटौ जगमांहे जेहथीजायै दूषरे जो० ॥ ६ ॥ धरम अनेक अवै जगमाहे पिणते हिंसामूल-
रे। धरम जैन अधिको जोवंता जीवदया अनुकूलरे जो० ॥ ७ ॥ एक धरमथीसिवसुष ल-
हीयै दहीयै कर्म कठोररे। एकथकीपिंड पापभरायै लहीयै नरक अघोर रे जो० ॥ ८ ॥ धर- ४
मतणीचर चा मांहोमांहे करइ अहो निसिएम रे। प्रीतिरीति सुंबेवे सुंदरी पालै परोजे मरे

जो० ॥ '९ ॥ सुपै समाधै इन परिरहती धरती प्रीत सुरंगरे। विषयतणा सुषविलसै बहु-
परि दिनदिन अति उछ रंगरे जो० ॥ १० ॥ काल नजाणै कि महीजातौ प्रिउ प्रियाइ करा-
गरे। कहै जिन हर्षढाल एबीजी गावौ आस्यारागरे जो० ॥ ११ ॥ दूहा ॥ सुषविलसंता
बेजणो जनमो पुत्री दोइ। राय करै उछवघणौ हीयडै हरषित होइ ॥ १ ॥ राणी सोहग
सुंदरी हरीभरीगुणप्रेम। तासुसुता मुरसुंदरि नांम वुलावीतेम॥ २ ॥ रूपसुंदरि बीजी
प्रीया तिहनी पुत्रीजेह। मवणा सुन्दरी तिहनो नामठव्यौ गुणगेह ॥ ३ ॥ पाचधाइ पाली-
जता करता प्यालविनोद। वरस पांच नोतिथई दीठा परम प्रमोद ॥ ४॥ भणिवा सारिषीथई
वुद्धितणो भंडार। मातपीता देषीकरी इण परिकरै विचार ॥ ५ ॥ ढाल ४ हरीया मनलागौ

॥ १३ दूहा ॥ जिन मतिधर अध्यापकै कुमरी भणावीजेह। जियरा मतिराच नही धरम
रंगाणी देह ॥ १ ॥ एक जसत्ता दुविधिनय काल तिणअगति च्यार। अस्तिकाय पांचे हुए
द्रव्य सात नयधार ॥ २ ॥ आठकरम नवतत्वतिम दसविध मुनिवर धर्म। पड़िम इग्यारस
बार ब्रत जांणै एहवा मर्म ॥ ३ ॥ मूलत्तर कम्मपयडि इगसौ अठावन्न। कर्म्म बंधना हेतु
पिण जांणै सत्तावन्न ॥ ४ ॥ बंधह उदय उदीरणा सत्ताजांणै तेह। सुहमविचार सवे
लहै प्रवचन आख्या जेह ॥ ५ ॥ ढाल ५ आंबाआंनिली रे एहनी ॥ सुंदरिए सुरसुंदरीरे
जोवनपहुती जोर अणीगुणीसगलीकलारे चतुरपणैचितचोर ॥ १ ॥ सुगुणनर जोवो पुन्य
विशेष। पुन्यैलहीयैरिद्धि असेष ॥ पुन्यै लहीयै प्रभुतापेपि वारूपुन्यतणाफलदेषि सु० ॥ २ ॥

रूपवन्तगुणलक्षणभारे विद्याप्रभुतासार। मदनाकारणछैसहूरे पिणमदनकरेलिगार सु० ॥ ३ ॥
इकदिन अध्यक्तरसभारे बैठौरायउल्लास। वोलावीवे निजसुतारे सायैपाठकतास सु० ॥ ४ ॥ विन-
यवती निजतातनेरे आवी कीधसलाम। चकितथई सगलोसभारे रूपनिरषि अभिराम सु० ॥५॥
पोलै वेसारीसुतारे राजाधरियविवेक। बुद्धिपरीख्याकारणे रे दीधसमस्या एक सु० ॥ ६ ॥ बादू
कह्योपरछैहलोरे पुण्येलहीये एह। गुणवंती सरसुन्दरीरे बोली ततपिणतेह सु० ॥ ७ ॥ धन
योवन डाहापणौ रे रोगरहित निजदेह। मनवल्लभ मेलावडो रे पुण्येलभ्मे एह सु० ॥८॥ रति-
यायत राजाथयो रे साभल तासवचन। कुमरी अध्यापकभणीरे लापगमे दीधोधन्न सु० ॥ ९ ॥
लोक पुख्याल सहु थयारे रंज्या रांणीभूप। सहुको लोक कहैइसुंरे एतौ सरसतिरूप सु० ॥ १० ॥

 तुम्हे पिण मैणासुन्दरी रे समस्यापूरो एह। अनुमतिलहै निजतातनीरे कहै कुमरी गुणगेह सु०
 ॥११॥ विनय विवेक प्रसन्नतारे सील सुनिर्मल देह। सिवपदनो मेला वडोरे पुन्यैंलहीयै एह सु०॥
१२॥ मातपिता हरखित थयारे हरख्या लोकनजात। प्राये मिथ्यातीभणीरे नगमै उत्तमवात सु०
॥१३॥ उत्तम उत्तमनैगमै रे नीचनै नीचसुहाइ। ढालथई एपांचमीरे कहीजिनहर्षवनाइ सु०
॥१४॥ दूहा॥ कुमरीनोगुणपरिकरी बुद्धिपरिख्याराय। आगलिजेथायैहिवै तेसुणिज्यो
चितलाई॥१॥ कुरुजंगजदेसै अछै संषपुरीइणनांम। नगरीतिहनो राजवी दमितारो अभि-
राम॥२॥ उज्जैणीराजातणो नितप्रतिसारैसेव। निजवदलै एकण वरस मूक्यौ अंगजदेव॥३॥
नामतासछै अरदमन अरदमिकीधाजेर। जांणेसूरतिकामनी नारिरहै नितघेर॥४॥ भमरो

केतकिगंधसुं मांडिरह्यै जिममोह। तिमसुखपामै नारीयां कुमरिनिहालीसोह ॥ ५ ॥ ढाल ६ जाटणीनी ॥ मदन मनोहर कुमर कलानिलो देषो जोवन वयसुकमाल ॥ कुमरो मोहीहो कुमर-सुजाणसुं। नयने जोवैहो फिरफिर कुमरने पांमै सुषसुपतास निहालि कु० ॥ १ ॥ दीठांहीयड उहेजे उलसे दीठापाषै अंदोह कु०। एतौ अण पायेपाणीरसौ एहवौपापीरसोह कु० ॥ २॥ ढाक्यौ नरहै किमहीनेहलो जो करौ कोडि उपाय कु०। आगछिपाईवासपलालमै परगटते पिण माहेयाय कु० ॥३॥ चोवाचंदन कुसमनो वासना छानीधरीयै छिपाय कु०। तौहि पिणमांहे परगटहुवै तिम एनेह दिषाय कु० ॥ ४ ॥ बापै जाण्यो नेह सुतातणौ पुत्रीसांभलि तु सुविचार। नेम न माने जेह्सुं प्रीतडी ते परणावुं भरतार कु० ॥ ५ ॥ हीयडै हरषी कुमरी इमकहै लोक

तणी तजिलाज कु० । वांछीवर पांमुं तो एहनैं परणावौ महाराज कु० ॥६॥ अथवा तुम्हे मुझनैं परणाविस्यौ माहरैं तेह प्रमाण कु० । बापदीयौ वर कन्यावरइ तिसुक लीणो सुजांण कु० ॥ ७ ॥ तुमथी लहीये वंछितनापजी तुमथी सुषलहीये श्रीकार कु० । पोतानोंजांणी सुषणीकरो तुम्हे माहरै करतार कु० ॥८॥ इणवचने राजा तूठौकहै जांणी अंतरभाव कु० । ए अरिदमण कुमर पुत्रीवरो जुगतो सरलसुभाव कु० ॥९॥ सहूकौने मनमांनी वातड़ी भलीकह्यौ महाराय कु० । सरिसासरिसोएजोड़ी जुडी आवी सहूकोनइदाइ कु० ॥१०॥ लोक सहूको राजानै कहै होस्यै इहांरंगरोलि कु० । एहजमाइ सोभै तिमघरे जिममुष सोभै तंबोल कु० ॥ ११ ॥ राजा पिण रलीयायत थईकरी कीधो वचन प्रमांण कु० । छठीढाल सगाई नृपकरी कहैंजिनहरष सुजांण कु० ॥ १२ ॥

दूहा ॥ हिवमयणानै पूछीयौ पिणबोलै नहीतेह। नीचीदृष्ट निहालती सुघडै लाजकरेह ॥१॥ पुनरपि राजा पूछीयौ पुत्रीमुझनै भाष। ताहरामनमां हे हुवै वरनीजे अभिलाष ॥२॥ वार वार इमपूछता कुमरी थई सलाज। सुषमुलकी कहै तातनै पूछणस्युं स्यौ काज ॥३॥ चतुर विचक्षणकौतुम्हे जाणौ छौ सहुनीति। कुलकन्यानै पूछीयै एह नही जुगतीरीति ॥४॥ कुलवंती कहौ किमकहै मुझपरणावौ एह। मात पिताजेहनै दीयै तेह जवर सुंतेह ॥५॥ निश्चय सुंजो जोईयै ते पिणवाह्य निमित्त। सषदुषपामै प्राणीयौ निज २ पूरबक्रित्त ॥६॥ ढाल ७ मयामोहिदिषणो आणि मिलाइ एहनी ॥ मयणाकहै सुणितातजीरे पूरबलिखित प्रमाण। ते सगलो आवीमिलै होजोकिहौ दूहा विनांण ॥१॥ पिताजी कर्म सबलजगमांहि

०पा०च० कर्मकरैतेहिजऊवै होजी सुष दुष अरति उछाह ॥ २ ॥ पि० जिणवेलायै जेहवारे जीव
९ कीधाकर्म । उदयथया तिण अवसरै होजीलहोयै फलनो मर्म ॥ ३ ॥ पि० रंक फेडो राजा-
करैरे राजाफेड़ीरंक । एहवौ कुणफेड़ीसकै होजी कर्मलिष्या जे अंक ॥ ४ ॥ पि० राय कहै
पुत्रीसुणौ रे तुं मुझ प्राण आधार । वार वार तुझसूकऊं होजीमांगि बंछित भरतार ॥ ५ ॥ पि०
सुताजोऊं सबलोजगमांहि । मुझतूठै सह्रूसंपजै होजी सुख दुख अरति उछांहि ॥ ६ ॥ सु०
माहरो आस्यासह्रू करैरे निबलानै बलवंत । ह्रूंतूठौ दालिदगमूं होजीरूठोजांणि क्रितंत ९
सु० ॥ ७ ॥ रंकप्रतै राजा करूंरे रायभणी करूंरंक । सबला ते पिण माहरीरे होजीमांनैमां
संक सु० ॥ ८ ॥ करणमतैत्युह्रूं करूंरे सुष दुषमाहरै हाथ । रूठोजमवर मोकलूं होजो-

तूठोकरूं नरनाथ सु० ॥ ८ ॥ वलितूं मयणावीनवैरे तातसुणौ मुझवत्त। तुमनै पिणकरमै कीया होजो राजन राजनिमित्त सु० ॥ ९ ॥ जेहनैपोतै पुन्यछैरे तेहनैहसै राय। पुन्यविना- तूसै नही होजीजोकरैलाष उपाय पि० ॥ १० ॥ छोहूपिण मोटातणारे सुषीया दुषीया होइ कारण छइसहु कर्मनो होजीगरब मकरज्यौ कोइ पि० ॥ ११ ॥ थाप्यौ कुमरो कर्म नैरे उथाप्यौ नृपवैण। रोसवसैथयौडाकलौ होजोकीधा रातानैण पि० ॥ १२ ॥ गरवकरौ पौतौजिकैरे तेहमै किसोसवाद। ढालथई एसातमी जिनहरष सुतानृपवाद पि० ॥ १३ ॥ दूहा ॥ रीसाणौ नृप इमकहै रे रे मूढगिमार। तूं लीला सुषभोगवै तेसहुमुझ उपगार ॥ १ ॥ पहिरैकंचण आभ- रण नव नव वेस बणाव। षाणापीणा षेलणा तेसहुमुझपसाव ॥ २ ॥ मयणा कहे सुखि-

तातजी हूं तुम्ह कुलउत्पन्न। मै पांमी सुखसाहिबी तेमुझ पौतैपुन्न ॥ ३ ॥ मयणा इणि परि-
भाषतां राजाथयौ क्रितंत। जिमपावक घृतसींचीयौ बाधैकाल अत्यंत ॥ ४ ॥ भाग्यहीण एटी-
करी दीसैछै परतच्छ। कह्यौ नमांनै माहरौ लीयौ नमेलै पच्छ ॥ ५ ॥ क्रोधवसै थयौरातड़ौ
धमधमीयौ नरनाह। सगपणबेटीबापनौ भागौमन उछाह ॥ ६ ॥ ढाल ८ नायकानी ॥ मयणाकहै
सुणितातजीरे इवड़ो मकरौरीस मोरा तातजीरे। जांणतुम्हे सहुवातनारेलाल तुम्है मोटा
अवनीस मो॰ ॥ १ ॥ म॰ फोकट गरब नकीजीयैरे गरवै सहुगुण जाइ मो॰। इंद्र नरेंद्र पिण॰ १०
गर्बथीरेलाल लघुतापणौ लहाइ मो॰ ॥ २ ॥ म॰ तुम्हे कहो जेहूंकरूं रे सुषीया दुषीया लोक
मो॰। करता हरताहूं सहीरेलाल तेतौ इमहीफोक मो॰ ॥ ३ ॥ म॰ तुम्हसेवाथी ओछवैरे

सुधीया सऊजगमांहि मो०। तुझ सेवाकरता नथीरे लाल तेतो सुषीया कांइ मो० ॥ ४ ॥ म० राय कहै रूठोथकिरेलाल तुनिरधनवर जोगरे। दुहागिणि एमतिसाढून विमिलैरे लाल तुझने उत्तम भोगरे दु० ॥ ५ ॥ म० मयणा सुणिसुभवातडीरेलाल लाहरै पोतै पापरे दु०। तौसभै तुझएह वुंरेलाल पामिसवऊ संतापरे दु० ॥ ६ ॥ म० हठमानी पोतातणीरे जांणैऊं बुद्धिवंतरे दु०। समभावा समझै नहीरेलाल अवगुणएह महंतरे दु० ॥ ७ ॥ म० राती निजगुणग्यान मैरे मूरष निगुण निटोलरे दु०। लेषवती केहनै नथीरेलाल मूढ नजांणै बोलरे दु० ॥ ८ ॥ म० ऊं जाणुं सुपणीकरूंरे परणावुं वरसाररे दु०। पिणमाहरो नकरै कह्योरेलाल थायैस दुषभंडाररे दु० ॥ ९ ॥ म० मयणाकहै तुमनै रुचैरे ते परणावौ नाह दु०। मुझपोतै पुन्यजोऊस्यै

रेलाल तोमुझ हेस्यै छक्राह दु॰ ॥ १० ॥ म॰ गाढेरोरोसावीयोरे सांभल एहवाबोल दु॰ ।

मोटाबोली दोकरीरेलाल मुझ लेषव्यौ दणतेलरे दु॰ ॥ ११ ॥ म॰ मुझनै दूण ऊथापीयोरे
थाप्यौ वषत सहायरे दु॰ । कहै जिनहर्ष सहुसुणौरे लाल आठमी ढाल कहादूरे दु॰ ॥ १२ ॥
म॰ ॥ दूहा ॥ रोषातुर नृपदेषिनै मंत्रीचिंतै एम । ठाढ़ंवयण सुधारसै सीतलथायैजेम ॥ १ ॥
महाराय रयवाड़ीयै रमिवानौ छै लाग । नईयेरमिवा आजप्रभू फूलरह्यौ छै वाग ॥ २ ॥
अंतरगतिदाभीरह्यौ क्रोधागनि विकराल । उठ्यौतुरत ऊतावलौ मांन वचनभूपाल ॥ ३ ॥ चर
वादार प्रतै कहै करौ तुरंग तइयार । हुकमसुणी आणयौतुरी सफलाणौ तिणवार ॥ ४ ॥
चतुरंगसेना परिवर्‌यौ राययथो असवार । हिवै आगलिजेनीपजै ते सुणिज्यौ अधिकार ॥ ५ ॥

ढाल ८ रे हमीरीयार रहि वैरीनैणमकोलतो एहनी ॥ राय रयवाडी संचर्यौ आगलि जडे-
मेह। मंत्रीसर। राजा चकितथई कहै आवैछे कुण एह मं० रा० ॥ १ ॥ आडबर करताथका
न घरै कासिगवाह मं०। कोलाहल हलबोलसुं मंत्री कहै सुणिनाह मं० ॥ २ ॥ रा० एपैडौ
कोढीतणौ सातसया परिवार मं०। कोढी सङ्‌भेलाथया वाध्यौ रोग अपार मं० ॥ ३ ॥ रा०
राज कुंअरएक नांन्हडो आवीमिलीयो मांहि मं०। तेपिणकोढी फरसयो ऊंबर रोग लहाय मं०
॥ ४ ॥ रा० ऊंबररोगथको थयौ ऊंबरराणोनाम मं०। ते आवैछै एचल्यौ एअ समाघनोठांम
मं० ॥ ५ ॥ रा० असवारी वेसरतणी परवरीयो परिवार मं०। गतनासा चामरधरै गलित त्वचा
छत्रधार मं० ॥ ६ ॥ रा० घंटाहाथे भालिनै सुहरचलै गतकर्ण मं०। 'लोकांनयोहावनि भूंडो

 जेहनौ वर्ण मं० ॥ ७ ॥ रा० कोढमंडल अंगओलगू गलितांगुल मंचीस मं० । सर्वगलितको-
१२ टवाल छै तेहमैं ऊंबर ईस मं० ॥ ८ ॥ रा० द्रादमंडलके ढगल्या दीसंता विकराल मं० ।
सेवक तास दोहागीया राधिरुधिर पर नाल मं० ॥ ९ ॥ देसाधिप पासैं लीयैं मननौ मांन्यौ
माल मं० । नाकोई नकहो सकैं एहवी एहनीचालि मं० ॥ १० ॥ रा० तेह भणीबीजीदिसैं
चाल्यौ श्रीमहाराय मं० । जावाद्यौ एकोढीया जिम दरसण न दिखाइ मं० ॥ ११ ॥ रा० बीजो-
दिसि राजा चल्यौ मारगछोड़ी जांम मं० । कोढीए दे निरषीयौ हूकल करतातांम मं० ॥ १२ ॥
रा० आव्यादे ऊंतावला नृपसांम्हा तिणवार मं० । तव राजा एहवु कहे सुणिमंची सुविचार १२
मं० ॥ १३ ॥ रा० परचावौ पासै जई मुहमांग्यौद्यौ माल मं० । पिणदूरै रे रहाविज्यौ करि

ज्यौ सुपलालपाल मं० ॥ १४ ॥ रा० हुकमदीयौ मुहताभणी वोचंतै भूपाल मं० । कहै जिन हर्ष पूरीथई नवमी ढालरसाल मं० ॥ १५ ॥ रा० । दूहा ॥ गलिताशुल जतावलौ अंबरनौ परधान । ते पहिली आवीकहै साभलिहो राजान ॥१॥ अम्बरराणौ अम्हतणौ साहिबछै सुपरांण । मानै सहुकौ तेहनै कोइ न लोपै आंण ॥ २ ॥ मणिमाणिक कंचिणरयण भोजन कूरकपूर । अम्बर राणौ हुकमसुं मझावै भरपूर ॥ ३ ॥ अम्हे सहूसेवक नफर सुपोयाता सपसाय । कजौ नही किण वातनी पिण साभलि महाराज ॥ ४ ॥ राणी नही राजातणौ एहछै मोटी षोड । दूककन्या द्यौ अमभणी जिम पुहचै मनकोडि ॥ ५ ॥ ढाल १० वातसकाढौहो मतनणी ॥ राय कहै किम दीजियै निजकन्या गुणवन्ती रे । रोगी नरनै अपता जगमै अपजस लहन्ती रे रा० ॥ २ ॥ वलि

तौ गलितांगुल कहै ताहरौ जसजगगाजै रे। मांग्यौद्यै मालवधणी एहविरुद तुम्भ छाजै रे रा०
॥ २ ॥ कैतौ कीरतिहारीयै कैदीजै निजकन्या रे। जेहवी तेहवी अम्ह भणी मानीस्यै ते धन्या
रे रा० ॥ ३ ॥ पड़ीयौ रायविचारणा अणुगत वातसुणाई रे। किमही दुरसपड़ै नहो दोतड़
पडीयौ भाई रे रा० ॥ ४ ॥ नृपनैमयणा सांभरी कन्याएवर जोगी रे। अविनयनो फलजिम
लहै थायै दुषिणी रोगी रे रा० ॥ ५ ॥ कीरति कहो किमहारीयै दोहिलीजे जगमांहे रे। कन्या
देता जसरहै तौ जसगमीवै काहे रे रा० ॥ ६ ॥ मुझ मन्दिर तुम्हे आविज्यौ इम कहि पाछो १३
वलीयौ रे। राय गृहांगण आवीयौ सालीतौ हलफलीयौ रे रा० ॥ ७ ॥ तेड़ी मयणा सुन्दरी
राय कहे सुण वेटीरे। ऊं तुझनै सुपचिन्तवु तुं अवगुणनीपेटीरे रा० ॥ ८ ॥ वाप सुकरमीजे

ऊवै वंछितवर परणावु'रे। हठ परहर सव बालिका दोहग दूर गमावु'रे रा० ॥९॥ जो आप करमोतु' ऊवै तो वर ऊम्बर राणोरे। तुभ करमैए आणीयो परणेवानो टाणोरे रा० ॥१०॥ मयणा सुलकीनै कहै वपतलिख्यौ वरराजोरे। ते सुभसिरनौ सेहरो मांहरै तेहसुं काजोरे रा० ॥११॥ रायै ते तेडावीयो सपरवारसुं आयोरे। करमसंयोगै न्रपकहै तु' वर मयणपायोरे रा० ॥१२॥ ऊम्बर कहै एराजवी वातन जुगती दीसै रे। दसमी ढाल पूरी थई कहै जिन हर्ष जगी सैरे रा० ॥१३॥ दूहा। वायस कंठइ कनकनी जिम सोभै नहीं माल। जोडी नही वग हंसनी तिमसुभनै एवाल ॥१॥ राय कहै एदीकरी कह्यौ न मानै सुभ। आप करम मानै सही तिण आपु'छू' तुभ ॥२॥ सुभ दीधौ वर आदरै तउपरणावु'जोय। करम मांहि तूहिज

लिख्यौ मुझनै दोसन कोइ ॥ ३ ॥ दयानत्र्यांणी चित्तमैं नांख्यो नेहलिगार । लोककहै एस्युं ययौ
श्री॰पा॰च॰ करै अधम आचार ॥ ४ ॥ उत्तम कोप करै नही करै ते मांन प्रमाण । पिणएजुग तूं न विकरै
१४ कोपै चढ्यौ अयांण ॥ ५ ॥ ढाल ११ बंगरी यानी ॥ उम्बर कहै सुणि राजवीरे । माहरी नही
एजोगि रे ॥ गुणवंता । ॐ कोढ़ी रोगै भर्यौ रे । रतन लगा डूंषोड रे गु॰ ॥ १ ॥ मुझ
सोभै नही एकांता । मैं पातक कीया अनंता गु॰ ॥ मुझ देषी सज्ज बाहंता तिण एहनो नही
मुझ कोडि रे गु॰ ॥ २ ॥ एकन्यांनै हूंकिहां रे एहंसी हूं काग रे । सरिषै सरिषौ जो मिलै रे १४
तौ सोभै महाभाग रे गु॰ ॥ ३ ॥ अविचार्यौ जो कीजीयै रे लोक हंसै घरि हांणि रे गु॰ ।
तुमनै एहवुंनचिघटै रे अपजसनो एषांण रे गु॰ ॥ ४ ॥ तूं द्यै पिण हूं ल्युंनही रे थाओ तुझ

कल्याण रे गु०। बीजीठामे मांगिस्युं रे कुम्वरनो एवाणि रे गु० ॥ ५ ॥ राय कहे एस्यूं करूं रे एहनो एहवो भाग रे गु०। वाकनवो तुझ मुझ तणो रे एकन्या तुझ लागि रे गु० ॥ ६ ॥ मयणानि सुनो एहवुं रे ऊठी तुतरततित वार रे गु०। एवर लिषीयो भागमै रे तौहिव किसो विचार रे गु० ॥ ७ ॥ उम्बर कर निज करगृह्यौ रे मयणा धरीय विवेक रे गु०। कोढी वर पिण आदर्‌यो रे छोडी नही निज टेक रे गु० ॥ ८ ॥ उमरा उसासंतजे रे मली सरपर धांन रे गु०। अंते वरवारे सऊरे वलै नही राजन रे गु० ॥ ९ ॥ लोक सऊ जोई रह्या रे दुषभर रोवेसैण रे गु०। सुपमैघालो आंगुली रे दूण परभापै वैण रे गु० ॥ १० ॥ एअजुगतुं नृपकरै रे काडोजपरिवाव रे गु०। पिण कोई न कही सकै रे राजा वदै सुन्याव रे गु० ॥ ११ ॥ एथई

ढाल इग्यारमी रे कीप्यौ राय अपार रे गु०। कहै जिन हरष छिवै सुणौ रे आगे लिजे अधि-

कार रे गु० ॥ १२ ॥ दूहा। रोवंतां इणपरि सहू कहै अधम एभूप। रयण अमूलक कन्यका किम नांषछै भूप ॥१॥ छोरूकु छोरू जे हुवै तौही पछिड़े नही मावीति। भोलपणै एह वौ कह्यौ तौही राजा चालै नीति ॥ २ ॥ छोरूवैचे बाप जौ तौ कुण आडौ थाय। जोरन चालै रायसुं सहू करै हाय हाय ॥ ३ ॥ दुर्लभ दरसण देषतां मयणा मोहन वेलि। आंबाएरंडपाषती रोपै छैगुण गेलि ॥४॥ सगले कीधा वीनतो सहू कह्यौ समभाय। कहणा माहेकेहनी बाकी न रही काय ॥ ५ ॥ ढाल १२ सुगुण सनेही मेरे लाला एहनी ॥ मयणा निज मन काठौ कीधो। जो मुझ वषतै एवर दीधो ॥ तौ मा हरै ए कम्बर रांणौ। इण भव एहिज प्रीतम जांणौ ॥ १ ॥

इहां कोई नो नही छैचारो। वाक न कोई इहां पितारो॥ दाय उपाय अनेक विचारो। करम सबल जग माहि अतारो॥ २॥ मन दृढ देषी कुमरी केरो। राय बल्यौ मन मां हि घणेरो॥ सतीशिरोमणि सत्वनचूके। लोधो पषसा पुरसन मूकै॥३॥ सायर मरज्यादा जो लोपै। चमावन्त मुनिवर जो कोपै॥ सेषनाग मुषजो विष उलटै। तौ पिण उत्तम वयण न पलटै॥४॥ पवन बुलायौ मेरनडोलै। मोटा दीनवचन न विबोले॥ आपद संपद मां हि सरीषा। तें भरबावन वीर सरीषा॥ ५॥ कर मायत्त सज्जुए दीयै। कुमरी निज मन माहे हीसै॥ एहवो देषी राय परणावी। जम्बर राणानै मनभावी॥ ६॥ जंबर कुमरो वेसर चढीया। निज डेरानै पंथै पडीया॥ नगरलोक सहु जभाणेवै। करे कुलाहल डसके रोवै॥ ७॥ एक कहै धिग धिग

ए राजा। एहनाषोटा थयादिवाजा॥ कोई कहै कुमरी अयाण। राजा रायवचन कीयो पर-
माण॥ ८॥ कोई कहै मा भूंडो कीधो। निज कन्या नै सीष न दीधो॥ कोई पाठक अवगुण
काढ़े। जिन मतनै कोई दूषण चाढ़े॥ ९॥ मयणा चाली उंबर संगे। हीयडे हरष धरी चढ़
रंगै॥ जैनधरम मींजी भेदाणी। किम पलटै तेहनी कही वाणी॥ १०॥ बारमी ढाल थई ए
जांणौ। कुमरी परणौ उंबर रांणौ॥ करम तणो जिन हरष कहांणी। ग्यांनी विण न विजाये
जांणी॥ ११॥ दूहा। हिवै बीजी कन्या तणौ जोडेवा वीवाह। तेडावो सिव भूतनै इन भाषे १६
नर नाह॥ १॥ लगन अनोपम जो हुवो निरदूषण आकार। सुरसुंदरि परणावीयै करी महो-
च्छवसार॥ २॥ लगन शुद्धबै असुक दिन एह जोस गनन कोइ। ज्योतिषशास्त्र निहालतां एह-

बो कहो कहोइ ॥ ३ ॥ जोसी वचन प्रमांण करि माड्यौ रायविवाह। परणावु सुरसुंदरी अधिको करी उछाह ॥ ४ ॥ ढाल १३ करडौ तिहा कोटवाल एहनी ॥ प्रीति धरी मन मांहि राय तेडाव्याहो साजण आपणा। सगासणी जा लोक प्रीतिवधारण हो आव्या अति घणा ॥ १ ॥ राजवीयोरै साथि आव्याहो राजकुमर रलीया मणा। अमरपुरी अवतार नगरविराजै मनुष्य सुहामणा ॥२॥ डेरा तंबू तांणि मंडपरचीया हो नव नव भातिना। रंग मंडप रंगाविकारण कीधा हो सगला पातिना ॥ ३ ॥ लोकिक विधि सहु कीधतेहनो स्यूं कहीयें लोक जाणै सहू। आव्यौ लगन सुदीस आरिम कारिम कीधा तिहा बहू ॥४॥ हिवै अरदमण कुमार सुंदर वा गाहो अंग बणावीयौ। पुरष तणासिणगार कीधा हो सहुकोनै मनभावीयौ ॥ ५ ॥ चंचल

चपल तुरंग सोवनसाकत चढ़ीयो नचावतो। जांणौ देवकुमार मुषजै तंबोल सुरंगा चावतो॥
चवरी मंडप मांहि कुमर आवीनै बैठो तिन सभै। बैठा सहू भूपाल वेह वणावी कंचन कलस
मै॥ ७॥ सोलैही सिणगार कुमरी वणाया सुंदर मनरली। आवी चवरी मांहि वादल मां
जांणै चमकी वीजली॥ ८॥ बेवी वरनै पासि सोहै जांणे श्रीपति रूकमणी। सोभा अधिक
सुहाइ जांणे इंद्राणी इंद्र कन्है वणी॥ ९॥ फिरीया फेरा च्यारि च्यारे चमरीमां मंगल वर-
तीया। कन्यावर कंसार मांहो मांहे मिलि जा रोगीया॥ १०॥ वरकन्या वीवाह करपरणा
व्या ढोलधुरावीया। गिड धुं धुं धं धुर्यारेनीसांण भेर भुङ्गल वाजावजाविया॥ ११॥ थयौ
सुरंग विवाहरंग सुरंग रह्यौ वेवाहीयां। ऊभाचारण भाट विरुद भणै मनडे उमाहीयां॥ १२॥

इथ लेवौ तिणवार जोसी जोडाव्यौ रूडी जुगतिसुं। ए थई तेरमी ढाल कहै जिन हरष जाण ज्यौ विगति सुं ॥१३॥ दूहा। करमे लावै नृपदीया सोवनरयण भंडार। सुंदर घोडा हाथीया दासी दास अपार॥१॥ बहु मोलिक वागादीया रतिन जडित सिणगार। सोवन पाए ढोलीया सउडि तुलाई सार॥२॥ दीधो सबलो दायजो कहु ता नावै पार। प्रीति तिहा दे तां थकां न करै कोई विचार॥३॥ राजा राणी नौ घणौ पुत्री उपरि प्रेम। माल अमामो आमीयौ प्रीति जणावी एम॥४॥ कोधी बहु पहिरावणी राजवीयानै रंग रसराम्यौ जस संग्रह्यौ वाध्यौ प्रेम अभङ्ग॥५॥ ढाल १४ राजा जौमिलै एहनी॥ लोकलुगाई मिलीया अछेह। वात करे मांहो माहि तेह॥ पुन्ये सहु मिले। पुन्ये मननामान्या सहु मिले॥ पुन्ये उत्तम सयण

संयोग। पुन्ये लहीये परबल भोग पु० ॥ १ ॥ सुन्दरि मिन्दिर रमणि विलास। पुन्ये पहुचे मननी आस ॥ पु० जौवौ कुमरी नौ पुन्य प्रकास। वंछित वर लह्यौ लील विलास पु० ॥ २ ॥ देवकुमर सरिषौ वरराज। कुमरी अपछरने सिरताज ॥ पु० सरिषी जोड़ि जोड़ी जगदीस। सुषभोगविलसे ए निसिदीस पु० ॥ ३ ॥ करिसे रूप सफल हिवे देह। जोवन सफल लेस्ये गुण गेह ॥ पु० एहवौ वरवररिद्धिपडूर। लहीषे जो ऊवे पुन्य अंकूर पु० ॥ ४ ॥ भाग्यवती कुमरी एधन्य। एह सरीषी नही कोई अन्य ॥ पु० एक वापनी पुत्री दोइ। परतिष पुन्य पटन्तर जोइ पु० ॥ ५ ॥ एककहे वाहूकर्‌यौ राय। राजा तूठेसुं न विधाय ॥ पु० एककहे कुमरी बुद्धिवन्त। बाप षुसी करि वरीयौ कन्त ॥ ६ ॥ पु० अध्यात्मने हाथे सिद्धि। भणी गुणी पांमी

वलिरिद्धि पु० ॥ एक कहे परतिप फल जोइ। सैंव धरमथी स्युं न विहोइ पु० ॥ ७ ॥ पाछ लिभव इणि पूजी गौरि। फललहस्ये आगे एतौ मौरि ॥ पु० लोकमिली इण पर करे वात। जीतानाथिली कहि वात पु० ॥ ८ ॥ मयणाने मोते नही पुन्य। पुन्य विना किम थईये धन्य ॥ पु० राजवीयांसुं करीय उपाधि। तौ जोवौ तेहना फललाध पु० ॥ ९ ॥ इम निजर मुष बोले बोल। समझि विहूंणा निगुण निटोल पु० ॥ कहै जिन हरष एचवदमी ढाल पु० ॥ १० ॥ दूहा। हिवै राजा ताजा प्रबल विवध भांति पकवांन। असन पांन खादिम प्रमुष जुगति जिमाडी जांन ॥ १ ॥ ऊपर दीधा अति अबल पान लवंग मुखवास। जस लोधो जीमा इनै सहु कहै सा बास ॥२॥ सगा सहु संतोषीया षरच्यौ माल अपार। पुंची हिवै चलाइवा राजा थयो तयार ॥३॥

सी०पा०च० हयगजरथ पायक प्रबल निहसपड़ैनीसांण। कुमरी न माता दीयै सीष भली हित आंणि ॥ ४॥
१९ ढाल १५ इतला दिनड़ं जांणैतीरेहां एहनी। हिवते सोहगसुंदरी रेहां पुत्रीनै दीयै सीष।
बाई सांभलौ।सासरीयां संतोषिजे रेहां हल वैभरजै वीष बा० ॥१॥ तुं छैचतुर सुजांण रेहां तु
मुझ आतम प्रांण बा०। विद्याविनयनीषांणि रेहां तुझ मुषि मधुरी वांणि बा० ॥ २॥ सेवकरै
परीजण तणौ रेहां स्वजन तणौ सुविसेष बा० ॥ कुविचन मकहिस केहनै रेहां किणसुं मकरस
द्रेष बा० ॥ ३ ॥ देव तणी परिपूजि जे रेहां भगत करे भरतार बा०। कह्यो सलोपे प्रिउ तणौ १९
रेहां उत्तम संगति धार बा० ॥ ४ ॥ सासू नणद जे ठाणीयां रेहां पड़िजे सहु नै पाय बा०।
सुसरानी सेवा करै रेहां सहु नै आवै दाय बा० ॥ ५ ॥ सूई जे नाह सूता पछे रेहां जीमि नाह

णीभाडि वा०। भोजन वेला घर तणा रेहां मेलहे बारउघाडि वा० ॥६॥ आवै कोई मांगिवा रेहां न करे तास नाकार वा०। पर कर ऊपरि कर करे रेहां भरजे सुजस भंडार वा० ॥ ७ ॥ रूडो घर दैपालिजे रेहां चलिजे चतु आचार वा०। सुपीहरी कह राविजे रेहां करिजे सऊ नीसार वा० ॥ ८ ॥ भूषा दुषीया देषनैं रेहा करिजे करुणा सदीव वा०। दोल तिहत्थो थाई जे रेहा कठिण करे मति जीव वा० ॥ ९ ॥ निसनेहणि मति थाइजे रेहां लिषि मोकालिजे लेष वा०। पुत्री प्रीतम मागसां रेहां सुष लयीयै देषि देष वा० ॥ १० ॥ जीव थकी तूं वाल ही रेहां तु अम्ह प्राण सरीष वा०। कहै जिन हर्ष सहू भणी रेहा पनरमी ढालै सीष वा० ॥ ११ ॥ दूहा।
मातपिता पाय लागिनै कुमरी चली प्रीउ साथ। हय गज पायक सुं हिवै बोलावै नरनाथ ॥ १ ॥

श्री०पा०च० ए मंदिर ए मालीया नगरी आही ठांण। मुझनैं वीसरिस्यै नही राति दिवसस्तु प्रमांण ॥ २ ॥
२० सीष करी सज्ज लोकसु नयणे नीरप्रवाह। होयौ फाटै आयनौ उलट्यो विरह अथाह ॥ ३ ॥
गलि लागी पुत्री तणै माइ करै आक्रंद। प्रेम तणै परवस थई हैं हैं मोहनरिंद ॥ ४ ॥ आंसू
कुमरी लोयणे जलधर जिम संजोई। हत्थली छाला पड्या चीर निचोइ निचोइ ॥ ५ ॥ रोतां
मृग रोवरावीया वाट वटाऊ लोक। जांतां जीव वहै नहो वीछड़वानौ सोक ॥ ६ ॥ कुमरी
चाली सासरै हिलमिल सीष करेह। फिर फिर जोवै पाछलै डब डब नयण भरेह ॥ ७॥ हिवै
कुंवर राणां तणौ सांभलि ज्यौ अधिकार। मन मां निश्चय राषीयो न धरै दुषलिगार ॥८॥ ढाल २०
१६ बिंदली तौ नणद गमा इन्हारै वहौड्यं देवर माईहे नणद बिंदली ल्यै एहनी ॥ कुंवर कहै

सुणि कुमरो तुंतौ कपै जाणे अमरी हो। सुन्दरि वयणि सुणौ। राय अनुगति कीधी मुझ कोढीनै तु दीधी हे सु० ॥१॥ वयण सुणौ म्रगनयणी म्रगराज कटी सिसिवयणी हे सु०। विधिना रूपनी पायौ देपो पोते सुप पायौ हे सु॰॥ २ ॥ ए जोवन तुझनो को सहु नारि तणै सिर टीको हे सु॰। मुझ आणा सिरधारी कोई पुरुष अवर सुविचारो हे सु॰॥ ३ ॥ भोगवि तिणसुं भोगा मन गमता सरस संयोगा हे सु॰। हुकम धणी नो होई इम करता दोष न कोई हेसु ॥ ४ ॥ नारि रयण तुं हीरा हुं नर मै काचक थीरा हे सु॰। तुं तौ उत्तम हंसी हुं वायस जाणि कुवंसी हे सु० ॥५॥ मुझ हियडै दुप झाझु राय करणी देपी दाझूं सु०। तै माटै हठ छोडी मुझ हुकमै कर काई जोडी हे सु॰ ॥ ६ ॥ मुझ पासै तेरहिस्यै तुझसुं सुषफल भोग विस्यै हे सु०।

उम्बरनी ए वांणी सुणि मयणा दुषभरांणी हे सु० ॥७॥ प्रीतम वयण सुणौ। नयणे नीरप्रवाहा
करजोड़ी कहै सुणि नाहा हो प्री०। चरणे सीस लगावी कहेसी एवात सुणावी हो प्री० ॥ ८ ॥
मनिमां जांणी रहिज्यो फिरिवीजीवार मकहिज्यौ हो प्री०। अधम जनम नारी नौ लैलौ जांणे
कुलगारी नौ हो प्री० ॥ ९ ॥ तजीयै सील अमोलौ तौकांजी कौही तोलै हो प्री०। सीयल
विभूषा कहीयै सीलै जस महीयल लहीयै हो प्री० ॥ १० ॥ इणि भवप्रिय तुं मोरै ऊं चेड़ी
सरणै तोरै हो प्री०। कां मन कोई वीजै तुझनै देषी मन रीझै हो प्री० ॥ ११ ॥ वालहे सर तुं २१
मन माहरै बलिहारी प्रीतम ताहरै हो प्री०। ए निस्चै मुझ जोवौ होणहार ऊवै तेहोवो हो
प्री० ॥ १२ ॥ सोलमी ढाल सुहावै जिन हर्ष सऊ सुप पावै हो प्री०। दूहा। सतीसिरोमणि

मनि सुदृढ निरमल सील सुहाइ। इकतारी इमराषतां अनुक्रमिरयण विहाय ॥१॥ प्रहविहसीं पूरबदिसै उदयथयौ आदीत। मानुं मयणा सुन्दरी देषे वा सुप्रवीत ॥ २ ॥ चिउं दिसि चिडीया चहचही बोल्या पंषी वृन्द। मानुं मयणानै कहै चिरंजीव चिरंनन्द ॥ ३ ॥ मयणा वयण कहै हिवै सुनि प्रीतम सुसनेह। जईयै उलट भावसु श्रीरिस हेसरगेह ॥ ४ ॥ मयणा उम्बर आवीया वद्यारिषभ जिणंद। मयणा स्तुति इणपरि करै हीइडै धर आणंद ॥ ५ ॥ ढाल १७ आदरि जीव क्षमागुण आदर एहनो ॥ जय जय रिषभ जिणेसरसाहिब सिव संपति-दातारजी। नामथकी नवनिधि सिद्धि लहीयै त्रिभुवन जन आधारजी ॥ १ ॥ ज० तुं करुणा सागर गुणआगर महीयल महिमावन्तजी। सुर नर नायक प्राय नमै नित दंसण नाण

अनन्तजी ॥ २ ॥ ज० अजर अमर अविचल अविनासी न लहै कोई सरूपजी। जोतीरूप
अरूपी अरिहन्त त्रिभुवननाथ अनूपजी ॥ ३ ॥ ज० सयंभू रमण विऊजलकेरा संख्या कहै कोई
तासजी। तुझ गुण संख्या न लहै कोई जो सारद मुष वासजी ॥ ४ ॥ ज० तुं परतिषि सुरतर
अवतारी बलिहारी तुझ नामजी। तुं सऊ जन्तुतणौ उपगारी भवभ्रमतां विश्रामजी ॥ ५ ॥
ज० तुझ नामै पांमै वंछित फल तुझ नामै बऊबुद्धिजी। तुझ नांमै लहीयै जस निरमल तुझ
नामै कुलसुद्धिजी ॥ ६ ॥ ज० सक्र चक्रधर पदवी लहीयै तिणमै किसौ विचारजी। मोक्ष २२
तणी पदवीनो दाता तुझ गुण अधिक अपारजी ॥ ७ ॥ ज० गोधबीज तुझथी पांमीजै तुझथी
लहीयै धर्मजी। लबधि सिद्धि तुझ नामै थायै तूटै सगला कर्मजी ॥ ८ ॥ ज० ताहरौ ज्योति

सकल त्रिभवनमै गावै सगला सन्तजी। केवल ग्यांन करीनै देषै लोकालोक अनन्तजी ॥ ९ ॥ ज० रोग सोग तुझ नामै नासै तुझ नामे सम्रद्धिजी। तुझ नामे लहै काया निरमल तुझ नामै रिद्धि रद्धिजी ॥ १० ॥ ज० आस्या पूरै चिन्तापूरै दूर गमै कलेसजी। पुन्यपसायै दरसण पाम्यौ पाप गया सुविसेसजी ॥ ११ ॥ ज० मयणा इणिपरि स्तवना कीधी भावभगति सुविसालजी। कहै जिन हर्ष थई एपूरी भली सतरमी ढालजी ज० ॥ १२ ॥ दूहा ॥ इम स्तवनां करतांथकां अन्तर भाव विसाल। जिन कंठैथी ऊछली कुसम माल ततकाल ॥ १ ॥ माला हाथे ऊछल्युं जिन वर कर फलजाम। ऊम्बर मयणा वयणथी ते फललीधो ताम ॥ २ ॥ माला मयणा संग्रही वचन कहै तिणवार। स्वामी ताहरा देहनौ रोगगयो निरधार ॥ ३ ॥ आपणसुं सुप्र

 पांमीय नवपद श्री नवकार भ० ॥ ११ ॥ स० अरिहंत १ सिद्ध २ सूरीसरू ३ उवझाया ४ सङ्
२४ साधि ५ भ० । दंसण ६ नांण ७ चरण वली ८ तप ९ नवपद आराधि भ० ॥१२॥ स० मयणा
नै मुनिवर कह्यौ नवपद नौ अधिकार भ० । ढाल अठारमी एतलै थई जिन हरष विचार भ० ॥१३॥
स० दूहा । ए नवपद संपद दियण उद्धारण त्रयलोय । जिन सासन नौ सारए एथी चिंतित
होइ ॥ १ ॥ मंत्र यंत्र एथी अधिक कोई नही संसार । कल्पवृक्षथी एअधिक भव भव सुष-
दातार ॥२॥ जे सीधा जे सीझि स्यै सीझैछै वलेजेह । ते नवपदना ध्यांनथी ए मां नही संदेह २४
॥३॥ ढाल १९ चतुर सनेही मोहनां ॥ नवपद महिमा सांभलौ ए सम अवर न कोईरे । एहनी
मोटि मम हियलै दिन दिन अधिकी होइ रे ए० ॥ १ ॥ ए नवपद थी नीपजै सिद्धिचक्र सुवि-

कारे ए० ॥ २ ॥ चौवीसे जिन थापीये
मारो रे। सकल सिद्धिदायक कह्यौ ग्यानी सास्त्र मझारो रे ए० ॥ ३ ॥ षेत्रपाल दिगपालजे
षोडश विद्यादेवीरे। सासनदेवी देवता ग्रहंगणउ चितठवेवीरे ए० ॥ ३ ॥ उत्तम तपसंज
सपरिवार थापीजैरे। यंत्रकरी विधि पूजीयै तनुवंछित फललीजैरे ए० ॥ ४ ॥ थायै
मथरी त्रिणयोग थिर रापीरे। निरमल ध्यांन धरी करी ध्यावै जिनवर सापीरे ए० ॥ ५ ॥
ततपिण निर्जरा अनुक्रम केवल लहीयै रे। मोच एहना जापथी वारस कठिन नरदहीये रे ए०
॥ ६ ॥ संसारी सुषपिण सहु लहीयै एहनै जापे रे। भवभवना पातिककीया पांणी वलि मां
कापैरे ए० ॥ ७ ॥ पुरुषोत्तम तुम्हनै कह्यौ एसिधचक्र सरूपोरे। समता रस मनमाधरी ए
आराधि अनूपोरे ए० ॥ ८ ॥ निरमल सीलधरी करी मन पर द्रोह निवारीरे। सुजस सभावे

विस्तरे जाये एह जयकारीरे ए० ॥ ९ ॥ आसू चैत्रसातिमथकी आंबिलकरि नवदिवसोरे । अष्ट
प्रकारे पूजीये ध्यानधरी जगदीसोरे ए० ॥ १० ॥ पञ्चामृत पूजाकरै नवमै दिन मनरङ्गोरे ।
पचषै आंबिल गुरुमुषै पांमै सुष्य अभंगोरे ए० ॥ ११ ॥ ढाल कही उगणीसमी सिद्धचक्र अधि-
कारोरे । मयणा सुष लहिस्यै हिवै कहै जिन हर्ष अपारोरे ए० ॥ १२ ॥ दूहा ॥ नवओली
आंबिलकीयां पूरो ए तप होइ । ऊजमणुं उचित करै पांमै नवनिधि सोइ ॥ १ ॥ मयणा कहै
करजोड़िनै भगवन पूछुं तुझ । ऊजमणानी विधि कहो ममभावीनै मुझ ॥ २ ॥ मुनि कहै
सांभलि श्राविका एहनी विधिछै भूरि । नाममात्र तुझनै कहूं पामिस सुषभरपूरि ॥ ३ ॥ ढाल
२० आश्रव कारण एजगजांणीये एहनी ॥ तपऊजमणो रे । मुनिवर दाषवै मयणानै हित

आंणि। तपफल ऊजमणाथी पांमीयै पूरण तप सुप्रमांण त० ॥ १ ॥ आलि प्रमुख पञ्चवरण तणाघणा ढोवै धांन प्रधान। सिद्धचक्रनी तिहांकरै थांपना धारी निरमल ध्यांन त० ॥ २ ॥ अरिहन्तादिक नवपद आगलै ठावै श्रीफल गोल। गोघ्रत उज्जल पंडमिश्रत करी जेथी होइ रङ्गरोलि त० ॥ ३ ॥ अरिहन्त पद धवलो गोलो ठवै कर्कें तन अठरयण। चोवीस हीरा रेवली मांहे ठवै वंछित सम्पति लेण त० ॥ ४ ॥ सिद्ध पदै इकवीस प्रवालडा रातामाणिक अष्ट। रक्तचन्दन लेपति गोलिकधरै टलै उपद्रव कष्ट त० ॥ ५ ॥ पञ्चमणो गोमेद छत्रीसनो सूरि पदै ठवै गोल। पञ्चवीस ठावै पाठक पदै नीलरतननीरे ओल त० ॥ ६ ॥ रिष्ट रतन सगवीसे मुनिपदै सतसठ एकावन्न। सित्तरिनै पञ्चास उलासस्युं मुगतासिस सुमन्न त० ॥ ७ ॥ निज

निज वरणरे वस्त्रादिक ठवै नवपदतणौ समेलि। षाजा दो ठारे नुकतीलाडुआ झाभी साकर भेलि त० ॥ ८ ॥ षारिक षुरमारे द्राष सोपारीयां निमजानै नालेर। इत्यादिक नव नव आगलि धरै षामै मोटिममेर त० ॥ ९ ॥ इम ऊजमणौ रे मनरङ्गै करे प्रांणी भावविसाल। कहै जिन हर्ष लहै सिव सम्पदा एयई वीसमी ढाल त० ॥ १० ॥ दूहा ॥ इण परिजे ए तप करै दुष्ट कुष्ट क्षय षास। रोग सोग दालिद्र दुष थाय सहुनो नास ॥ १ ॥ दोहा गिणि वंध्यापणौ विस कन्यादिक दोष। स्त्रीनै एथायै नही पुण्यतणौ होइ पोष ॥ २ ॥ सिंघ भणी गुरु उपदिस्युं ए नर लक्षणवन्त। जिन शासन दीपाविस्यै भगति करौ मनषन्ति ॥ ३ ॥ सातषेत जिनवर कह्या श्राविक पुण्य पवित्र। साते सचवायै सही साहमी भगति विचित्र ॥ ४ ॥ इमनि सुणी सहुको

कहै ऊंबर भगति अपार। रहिवा मन्दिर आपीया धणकण कञ्चन सार ॥ ५ ॥ दूहा ॥ ढाल २१ सोभितरो सिरदार एहनो ॥ हिवै उम्बर निज नारि वयण मनमांधरीहो लाल व०। सद्गुरु हितउपदेस हीयामै अनुसरोहो लाल ही०। सिद्ध चक्र पूजा सीषी गुरुसानिधे होलाल सी०। जाणै बुद्धिप्रमांण सुजाण भलीविधै होलाल सु० ॥ १ ॥ आव्यौ आसूमास महूरत सुभ-दिने होलाल म०। सिद्ध चक्रनो तप आरंभ्यौ सुभमने होलाल आ०। तिम मन वचन पवित्र करी जिन मन्दिरै होलाल क०। पूजा श्रीजिन राय-अपाय दूरै करै होलाल अ० ॥ २ ॥ सिद्ध चक्रनी पूजकि आठि प्रकारनी होलाल कि०। मयणा-ऊम्बर दोइ करै विस्तारनी होलाल क०। आंबिल नोपच खाण करै मनउ मही होलाल क०। सुगुरु वचन प्रमांण हीयामै गह्

गही होलाल ही० ॥ ३ ॥ दिन दिन ओछो रोग हुवै दूण जापथी होलाल हु०। तूटै करम
कठोर विछूटै पापथी होलाल वि०। नवमे दिस विसेस न्हवण पञ्चाम्रतै होलाल न्ह०। सिद्ध
चक्रनी पूज रचै सुमन ससितै होलाल र० ॥ ४ ॥ स्नान करी मनरङ्ग न्हवण जल छांटीयो हो
लाल न्ह०। रोग गयो ततकाल नीरोगी तन थयो होलाल नी०। जांणे रतिपति रूप अनूप
विराजीयो होलाल अ०। नवपद महिमा अधिक जगत मांगाजीयो होलाल ज० ॥ ५ ॥ सिद्ध
चक्रनै न्हवण अवर सहु रोगीया होलाल अ०। कञ्चण वरणी देह थया नीरोगीया होलाल
थ०। मयणा पतिनो रूप निहाली इम कहै होलाल नि०। गुरुनो ए उपगार सुजस महीयल
लहै होलाल सु० ॥ ६ ॥ ऊंबरदेव कुमार सरूपे आगलो होलाल स०। सज्जना टलीया रोग

धरम थयो उजलो होलाल ध०। फलीय मनोरथ माल कुमर मयणा तणी होलाल कु०। की रति याधी लोक मझारि घणु घणी होलाल म० ॥ ७ ॥ महिमा श्रीजिन धर्म सुगुरुनौ निरषीयो होलाल सु०। देव धरम गुरु भक्ति उजमणौ तिमकीयो होलाल उ०। जिन गृहथी इक दिव स नीसऱ्या दम्पती होलाल नी०। साम्ही आवि नारि ओलपी सुभमती होलाल ओ० ॥ ८ ॥ पायें लागे ताम कुमरहरषै करी होलाल कु०। हीयडै हेज अपार सजल आंष्यां भरी होलाल स०। मायडी पुत्र वियोग सुंवेदन उपसमी होलाल सुं०। ढाल थई जिन हर्ष कहै इकवीसमी होलाल क० ॥ ९ ॥ दूहा ॥ कुमर कहै सुण मातजी वहुदिवसे मिली याह। उमाहौ सफलौ थयो दुपदो हगटलीयाह ॥ १ ॥ मयणा सासू जाणिनै पायपडी तिणवार। माता तुझ वहु

अरथकी हुं नीरोग विचार ॥ २ ॥ माय कहै वहुअर सहित जीवै कोड़ि वरीस। अविचल
जोड़ी तुम तणी इम दीधी आसीस ॥ ३ ॥ आलिंगन देई करी पूछै कुसल सरीर। माता तुझ
परसादथी हुं थयौ आसस धीर ॥ ४ ॥ इतला दिवस किहांहुता मात कहौ मुझ वात। जणणी
कहै सुत आगलै पूरवला अवदात ॥ ५ ॥ ढाल २२ म्हांरो लालपोयै रङ्गछोतरा एहनी। तुझनैं
पूछी पुत्रहुंचली उज्जेणी थीको संबो पहुतीरे। मुनिवर दीठौ एकदिहरै वांदी मनमांगह
गहतीरे तु० ॥ २ ॥ मै दाष्यु मुनिवरनै एहवुं इण नगरी वैद्यनो वासोरे। आवी पुत्र रोग
पड़ी गणौ पूछेवातिहनो पासौरे तु० ॥ २ ॥ भगवन कहौ पुत्र कहीयै हुस्यै निराबाध मुनि
तव भाषैरे। तुझ सुत कोढी टोलै भिल्यौ जिननाथ करीनै राषैरे तु० ॥ ३ ॥ उम्बर रांणा नांमै

कह्यौ परण्यौ मालवपति बेटीरे। मयणा सुंदर नामे भली सीलवन्ती गुणपेटीरे तु० ॥ ४ ॥ सद्गुरु वचने दम्पती भावे सिद्ध चक्र आराधैरे। कञ्चण वरणी काया थई निजधर्म भली परिपालैरे तु० ॥ ५ ॥ उज्जैणी मैं सुषसुं रहै इमथई सुणि हर्ष सनायीरे। इहा आवीऊं मिलिवाभणी तुम्हने दीठौ बऊ सायोरे तु० ॥ ६ ॥ सासू बऊपुत्र सुषे रहै करता जिन धर्म उमेदैरे। इकदिन जिनवर पूजाकरी अंग अग्रभली बिऊं भेदैरे तु० ॥ ७ ॥ एहवै अवसर हिवै सांभलौ मयणा सुन्दरीनी मातारे। राणी रूप सुन्दरी गुणभरी नृपसुं रीसावी जातारे तु० ॥ ८ ॥ जई बैठी निज भाई घरे पुन्यपाल कृपाल कहावेरे। दुष सोक घणौ मनमां करे मयणा विणिषिण न सुहावेरे तु० ॥ ९ ॥ कित लेकै दिवसे दुषतजी जिन धर्म करै मनरंगैरे। आवी जिनवर

दरसण भणी तब देषै कुमर सुरंगेरे तु० ॥ १० ॥ एतो अमर कुमर रूपै भलौ फिर फिर सामो
जोवैरे। जोतां२ तिणि ओलषी एतौ यमणा पुत्री होवैरे तु० ॥ ११ ॥ पुत्री पासै कोई ए नवो
राणी मनमांभरमांणीरे। जिन हर्ष कहै मझ आगलै बावीसम ढाल वषाणीरे तु० ॥ १२ ॥
दूहा ॥ कोढ़ीपति छोड़ी करि अवर पुरुषसुं प्रीति। तजि आचार सती तणौ कीधो इणि
विवरीति ॥ १ ॥ एहवी एहन जांणीयै मयणा जिन मत जांणि। रजनीकरवा किमघटै दिवस
करैजे भांण ॥ २ ॥ अथवा वलीयो कर्मछै करमै दुरमति होइ। रूड़ा भूंड़ास्यूं करै पछे २९
जोर न कोइ ॥ ३ ॥ कुल निकलंक कलंकीयौ जिन सासन दूषाय। पुत्री मूई दुष नही पिण
दुष सह्यौ न जाइ ॥ ४ ॥ माता इणिपरि दुष करै मैणाकेडै बैसि। कांपै पुत्री छत अधम हियडां

मांहि पैसि ॥ ५ ॥ ढाल २३ ईंढोणी चोरीरे एहनी ॥ मयणानि सुणी बोलडा मामोरीरे। संका आवी मनमांहि सुताऊं तोरीरे। चैत्यवन्दन पूजो करी मामोरीरे। वंद्या जिनवर उच्छाहि सुताऊं तोरीरे ॥ २ ॥ करवन्दन मायनै करी मामोरीरे। साभलि माहरा अवदात सुताऊं तोरीरे। तुम्हनै दुष करवौ नही मामोरीरे। एहवी किमकरीयै वात सुताऊं तोरीरे ॥ २ ॥ साम्हौ हरप वधारीयै मामोरीरे। पुत्रीवर देपि सरीर सुताऊं तोरीरे। रोग गयौ जिन धर्मथी मामोरीरे। मकरो मन दिलगीर सुताऊं तोरीरे ॥ ३ ॥ माठुं थायै नहीकदे मामोरीरे। तुम्भ पुत्रीथी निरधार सुताऊं तोरीरे। पूरव तजि पश्चिम दिसै मामोरीरे। किमऊगै कहौ दिन-कार सुताऊं तोरीरे ॥ ४ ॥ अजीजगै छोडै नही मामोरीरे। सायर अपणी मरजाद सुताऊं

 तोरीरे। हरष विनोद हीयै धरो मामोरीरे। परहरि मन विषवाद सुताऊ' तोरीरे ॥ ५ ॥
३० एहवै कुमरनी मायड़ी मामोरीरे। बोली मुष मीठी वांणि सुताऊ' तोरीरे। सुझ सुत नीरोगी कीयो मामोरीरे। उत्तम गुणिनी षांणि सुताऊ' तोरीरे ॥६॥ धन धनताहरी कूषड़ी मामोरीरे। उपनी मयणा जिहां आय सुताऊ' तोरीरे। सीलै सीता सारिषी मामोरीरे। दूणमै षोड़िन काय सुताऊ' तोरीरे ॥ ७ ॥ तुम सतबाई जगतमां मामोरीरे। निरमल पांम्यौ जसवास सुताऊ' तोरीरे। सन्तितजेहनै एहवी मामोरीरे। जनम जीवित धनतास सुताऊ' तोरीरे ॥ ८ ॥ ३०
मिलीवे वाछिणि बेतिहां मामोरीरे। रूप सुन्दरि मिटयौ सन्देह सुताऊ' तोरीरे। धन धन मयणा सुन्दरी मामोरीरे। जिण पाल्यौ सील निरेह सुताऊ' तोरीरे ॥ ९ ॥ निरमल कुलदीप वीयो

मामोरीरे। धरम उतार्यो आल सुताऊं तोरीरे। कहै जिन हर्ष पूरी थई मामोरीरे। एकवीसमी ढाल सुताऊं तोरीरे॥ १० ॥ दूहा॥ रूप सुन्दर मयणा प्रतै पूछै धरीय सनेह तुझ पति नीरोगी थयो ते मुझ संभला वेह ॥ १ ॥ सावद्य देहरै बोलतां थाये निसही भंग। मुझ घर जई कहिसुं सही चालो धरमन रंग ॥ २ ॥ मन्दिर आवी आपणै कही सगली वात। सिद्धचक्र आंबिल तणौ ए महिमा विख्यात ॥ ३ ॥ कुमर तणो माता प्रतै पूछै मयणा माय। वंसादिक तुम्ह पुत्रनौ वाई मुझ सुणाय ॥ ४ ॥ ढाल २४ की कोई वर लाधो एहनो ॥ हिवै कहै कुमरनी मायडी अंगदेस सुरंग विख्यात रे वैवाहिणि तुम्हें सुणौ। नगरी चम्पा तिहां अति भली नरि नारी सुखी दिन राति रे वेवा० ॥ १ ॥ सिंहरथ राजा तिहां राजीयो परजा पालै

 सुतजेमरे। कमलप्रभा पटरागिणी कुंकण नृप बहिनी प्रेम रे वे० ॥ २ ॥ वज्र देवी देव आरा
 धतां सुत जायौ रूपै कांमरे वे०। नृप लिषिमी लीलापामिस्यै श्रीपाल दीयौ तसु नांमरे वे०
॥ ३ ॥ सुत दोइ वरसनौ ते थयो राजा सूलै पीड़ाइ रे वे०। तिण रोगै मृत्यु लह्यौ सही हाहा
रव नगरी थाइरे वे० ॥ ४ ॥ मतिसागर मन्त्री बुद्धि निलौ से सब वध आपै राजरे वे०। श्री-
पाल भूपालनी आगन्या मन्त्रीस चलावै काजरे वे० ॥ ५ ॥ राजकरंताकै ईक दिन थया काको
श्रीपालनो तासरे वे०। अजितसेन नांमै अछै राज्य लेवानौ थयौ कांमरे वे० ॥ ६ ॥ द्वेष धरै
मन्त्री रायसुं सामन्त साथे करै भेदरे वे०। दोइ जणानै हणिवा कारणै करै मन्त्रणौ करिवा
छेदरे वे० ॥ ७ ॥ मन्त्री जांणी ते वातड़ी संभलावी सुभानै ते हरे वे०। मन्त्रीस्वर कहै रांणी

सुणो जतने राखौ सुत ए हरे वे० ॥ ८ ॥ जीवस्यै तौ राजऊस्यै वली सुत एकज एहही दूधरे वे० । तिण कारणि ए लेई करी जाओ तुम्हे आखालू घरे वे० ॥ ९ ॥ केडैथी अम्हे पिण जाइ स्युं नाठां विण कुसल न होइरे वे० । मन्त्रीना वयण सुणी इसा नाठाऊं नै सुत दोइरे वे० ॥ १० ॥ एकलडी ऊं राते चली छानी न विजाणी के मरे वे० । नन्दन कडीए पन्थ चलिवुं कांटा भागै पाएणरे वे० ॥ ११ ॥ धरती ऊंची नीचो घणुं अथडाउं तन सुकमालरे वे० । दुप एक हतो पति मरणनो राज्यभ्रष्ट थया सुत बालरे वे० ॥ १२ ॥ वयरी नौ भय मनमै घणौ दूम चलता रात विहायरे वे० । एतलै थई ढाल चौवीसमी जिन हर्ष कही चित लाइरे वेवाहिणि तुम्हे सुणौ ॥ १३ ॥ दूहा ॥ दुप भर दूण परिचालता नीठ थयौ परभात । कोढी नो टोलो

सबल आगलि एक दिषात ॥ १ ॥ कमला ते देषी करी मनमां थई भयभ्रांति । कहीए बालक
एकली न लहै चितनें रांति । २ ॥ रोवै जोवै दहदिसै कोढ़ी करुणावन्त । दुषणी देषी मुझ
भणी पूछै सहु हतन्त ॥ ३ ॥ ए बन्धव सहु ताहरा तुं अम्ह बहिन सरीप । पूछो वात कही
सहु आपी रूड़ी सीष ॥ ४ ॥ ढालमांनांदरजणरी ॥ २५ ॥ देई दम आसासनारे निरभय
कीधी जांम । वरवे सरिबैसारिनै ओढाड़ी अम्बर तांमरे । शांभलिज्यौ आगै वातरे जिम सीठी
लागै ॥ १ ॥ भागैरे भागैरे मनना दुष दोहग भागै आंकणी इण अवसर केडै घकोरे । आव्या
अरि असवार रोस भर्‍या आउ धधर्‍या मुष बोलंता मार माररे । सांभलि॰ ॥ २ ॥ पेड़ाने
आवी कहेरे तुम्ह दीठी इक नारि । पासै सुंदर दी करौ रूपै रतिपति अवताररे । सांभलि॰

॥ ३ ॥ पेडौ कहै तुम्हे सामलौ रे अम्ह पासैछै पाम। ते तुम्हनै आपु अम्हे आवै जो कोई कामरे। साभलि० ॥ ४ ॥ सुभटे जांणयु रोगीयारे काई नदीसै पासि। इहांजभांजुगतौ नही रोग भय दूरै गया नासिरे। साभलि० ॥ ५ ॥ उम्बर रोगे पीडीयो रे अङ्ग थयौ विदरङ्ग। पुत्र पडी गणौ पूछतो ऊं गई कोसंबी द्रङ्गरे। सामलि० ॥ ६ ॥ तिहां जांईने लोकनै रे पूछ्यौ वैद्य नौ गेह। लोकसुपै मै साभल्यौ तीरथ भणी पऊतो ते हरे। सांभलि० ॥ ७ ॥ ऊं रही तिहां वासर घणारे जोती वैद्यनो वाट। साधु थकी सुघलही सऊं मननो मिटीयो ऊचाटरे। सांभ० ॥ ८ ॥ ऊं आवी इहा पूछतीरे अङ्गज मिलिवा काज। ऊं कमला एमाहरो सुत जांणेज्यो सिरताजरे। सांभलि० ॥ ९ ॥ कमलाने वचने करीरे राणी थई निसंक। पुत्री गुणवन्ती सती

एहनै किम लागी कलङ्करे। सांभलि० ॥१०॥ निरषि जमाईसांमुहोरे नृपति न पांमै लेस।
मुझ पुत्रीनो जोईज्यौ फलीयो कांई भाग्य विसेसरे। सांभलि० ॥११॥ रूप सुन्दरि सुष पांमी
थोरे जलसीथा सङ्ग अङ्ग। ढाल थई पचवीसमो जिन हर्ष थया उछरङ्गरे। सांभलिज्यौ आगे
बातरे जिम मीठी लागै ॥१२॥ दूहा ॥ पुन्यपालनै सङ्ग कह्यौ रूपसुन्दरी जई गेह। मांमै
तेड़ी निज घरे आण्याघणै सनेह ॥१॥ सुन्दर मिन्दर आपीया आपी धननी कोड़ि। पञ्च
विषय सुख भोगवै बेजण प्रेम सजोड़ि ॥२॥ इक दिन राजा नीसर्यौ पासै कुमर आवास। ३३
दीठी मयणा कुमरसुं करती विवध विलास ॥३॥ मयणा कोढ़ बीजौ कर्यौ सुंदरि पुरुष
सरूप। कोढ़ी परिहरियो परौ इम मन चिन्तै भूप ॥४॥ पहिलो क्रोध वसेण मै कांम अजुग

तो कीध। चीजो मयणा मयणवि लंछण मुझ कुलदीध ॥ ५ ॥ ढाल २६ पीछो लारी पाल
थाना टोह मोरीयाम्हांरा लाल एहनी ॥ पुन्यपाल ततकाल जणावै रायनै म्हारा लाल ज०।
आग्गे जीनी वात सहू समभायनै म्हारा लाल स०। आव्यो नृप आवास कुमरनै उमही म्हारा
लाल कु०। प्रणमै मयणा कुमरि चरण मन गहगही म्हारा लाल च० ॥ १ ॥ लज्जावन्त निरन्द
कहे वाई सुणो म्हारा लाल क०। मैं तुझनै मतिहीण दीयोछै दुषवणो म्हारा लाल दी०। मुझ
अविनय अपराध असाध वीसारजे म्हारा लाल अ०। उत्तम गुण गुणवन्त हीयामैं धारिजे
म्हारा लाल ही० ॥ २ ॥ मयणा विनय बहंत मधुर वयणे कहै म्हारा लाल म०। दोसनको तुम्ह
तात करम फल सहू लहै म्हारा लाल क०।, सुष दुष करम संयोग सहू आवी मिलै म्हारा० स०।

करम म्हा बलवन्त न टाल्यौ हो टलै म्हां० न० ॥ ३ ॥ इमजांणी तुम्हे तात जिणे सरवसंसुं
म्हां० जि० । नवतत्व राचौ राय मराचौ धर्मसो म्हां० म० । इमनि सुणी नरनाथ धरम अङ्गी-
कर्यो म्हां ध० । अपकारै उपकार सुतातै आचर्यो म्हा० सु० । वालीनै वलि विनय वहै गुण
संग्रहै म्हां० व० । धर्मप्रभावै जेह जगतमै जसलहै म्हां० ज० । कुमरी सम श्रीपाल जमाई निर-
षीयौ म्हा० ज० । उलट अंगनमाइ हीयामै हरषीयौ म्हांरा लाल हो० ॥ ५ ॥ कीधो वांकौ
राय कह्यौ थयौ पाधरौ म्हां० क० । मूगमांहे जाणे घीय ढुल्यौ थयौ एमरौ म्हां० ढु० । पुत्रीए
धनवन्त फल्यौ पुन्य एहनै म्हां० फ० । श्रीजिन धर्म प्रसाय थया सुष जेहनै हो लाल म्हां०थ० ॥६॥
गजि उपरि आरोपि जमाई पुत्रिका म्हा० ज० । लेई गयौ निज गेह करी आरातिका म्हा०

क०। गोरी गावै गोत नगारा वाजीया म्हा० न०। आडम्बर उछाह गुणीगण गाजीया म्हा० गु० ॥७॥ धणकण कञ्चण माल महल न्टप आपीया म्हा० म०। सारो नगरी लाहि सुजस थिर थापीया म्हा० सु०। कुमर चव्यौरे वाडी रमिवा किणि समै म्हा० र०। देषै लोक अपार सज्जनै मनगमै म्हा० स० ॥ ८ ॥ पूछै माहो माहि कुमरि ए कुण अछै म्हा० कु०। एक कहै न्टप भूय धणी बीजो नछै म्हा० भ०। वचन सुण्यौ श्रीपाल विछाय थयो घणु म्हा० वि०। छावीसमी जिन हर्ष ढाल इण परि भणु म्हा० ॥ ९ ॥ ढाल सर्व गाथा ४३६ ॥ दूहा ॥ रयवाडी नई आवीयो पिण मनमै दिलगीर। जननी पूछै आज तुं एहवो किमतु वीर ॥ १ ॥ चिन्ता मनमांहे किसी पुत्र कहो मुझ तेह। चिन्ता कारण मायनै कुमर कहै ससनेह ॥ २ ॥ माहरे गुणेन ओलषै

कीधरे पर० ॥ ११ ॥ आदर करि तेडी गयौ विद्याधर निज गेहरे। सोवन सिद्ध रसकुंपिका कुमर सहाज्य करे हरे पर० ॥ १२ ॥ गुण सांभलि जलतारिणी एक जड़ीछै ए हरे। बीजी शस्त्र निवारणी महिमा तास कहेहरे पर० ॥ १३ ॥ ढाल कही सत्तावीसमी वषता वरनर जे हरे। कहै जिन हर्ष जिहां तिहां सुषीयो थायै ते हरे पर० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ४५५ ॥ दूहा ॥ कुमर भणी कृतघन कीयौ चाल्यौ सीष करेह। भरुअछ नयरै आवीयौ सुषसुं तिहां रहेह ॥१॥ इण अवसर हिवै तिण नगर धवलसेठ धनवन्त। पूरै प्रवहण पांचसै घरो धरी मनपन्ति ॥२॥ सुभट सहसदस राषीया चौकी पौहरा काज। नृप आदेस लेई करी सुभमुहूरत दिन साज ॥३॥ बलबा कुल देई करी वाहण पूर्‌या जांम। ठामथकीनविचातरै धवल चिन्तातुरतांम ॥४॥

ढाल २८ चरण करण धर मुनिवर वन्दीयै एहनी ॥ सेठै जई पूछीसीकोतरी ते कहै नर बलवंतो जो। बल आपे तौ उफवाहण चले बत्ती सलच्चण गुणवंतो जी से° ॥ १ ॥ सांभलि सेठ पुसी मनमा थयौ वीनवीयो जई रायो जी। स्वामो एक पुरुष सुभ दीजीयै बलि काजे सुष थायो जी से° ॥ २ ॥ राय कहै जे परदेसी हुयै नर एकलडौ अनाथो जी। ते लेजे गाहरीछै आगन्या अवरमला एही थायो जी से° ॥ ३ ॥ सुभट धवलना फिरता जोवता दीठो तिहा स्रीपालो जी। जाण्युं नरए परदेसी सही लच्चण अंग विसालो जी से° ॥ ४ ॥ सुभट कहे साभल परदेसीया आव्यो ताहरो कालो जी। धवल सेठ हणिस्यै बल कारणै रूठौ जिम विकरालो जी से° ॥ ५ ॥ सूभे बलपालीसीपो कहै सुभट सुणेज्यो वातो जी। धवलतणो बलद्यौ चामुंडनै तेहनै करीयै

घातो जी से० ॥ ६ ॥ सीहतणी बलकदेन सांभली सीपो किम बल दीजै रे। अलधमीयो सीसें थयौ रातड़ौ तुज वतरायरपीजै रे से० ॥ ७ ॥ अविचार वी बोलीयो एहनु नाकिल्यौ फल तत कालो जी। आवी सुभटे कुमरनै बीटीयो जह्यातालझरालो जी से० ॥ ८ ॥ धवल कहै वंडो थंड कीजोयै एहनै एहीजदंडो जी। वरसै तीर सडासड अतिवणा तो मारपडग निलंडो जी से० ॥ ९ ॥ नाखगोलागरडै गयणं गनौ ओगर गुरज अपारो जी। धवलनैं पोरस चीन कुमरनै इम वाहै हथीयारो जी से० ॥ १० ॥ इणपरि गुन्न थयो अति आकरो धवल अनें वोपालो जी। कहै जिन हर्ष पूरी थई एतले अठावीसमी ढालो जी से० ॥ २२ ॥ सर्वगाथा ८७० । दूहा। सस्त्र न लागै कुमरनै जड़ीतणै परभाव। पिणि कुमरै सज्जना कीया नीसाकेस समाव ॥ १ ॥

प्रांण हण्या नही केहना दयातणे भंडार। धवल विचारे चित्तमां देपी सकति अपार ॥ २ ॥ बल छोडो जोडी कमल धवल कहे ग्रहिपाय। स्वामी वाहण किम चले ते कहो कोई उपाय ॥३॥ कुमर चलावु ं ऊ ं कहे जोधेलाप दीनार। आरत मीठो आपणो सेठ भण्यौ हाकार ॥४॥ धवल सहित वाहण चढी नवपद जपि थई वाक। सोहतणी परगाजतो सीपे मेल्ही हाक ॥ ५ ॥ ढाल २९ थेणिक मन अचिरिज थयो एहनी ॥ ततपिण प्रवहण चालीया वाज्या भूंगल भेरी रे। ताल नगारा वाजीया महिमा थई अधिकेरी रे ॥ १ ॥ लाषदीनार देई कहे तुम्हे पिण ओलग-सारो रे। वरसे स्युं लेस्यो तुम्हे कीजे तेह विचारो रे ॥ २ ॥ सुभट सहुल्यै जेटलो तास जमल मुझ दीजे रे। विपमी करि स्यु ं चाकरी माहरो मुजरो लीजे रे त० ॥ ३ ॥ सेठ कहैपप अम्हे

नथी बैठोभाड़ो देई रे। भरीयै दरीयै चालिया नमइ हरष धरेई रे त० ॥ ४ ॥ रतन दीप भणी
मुं कीया आया बव्वर कूलै रे। जलई धण लेवा भणी ऊतरीया तटमूलै रे त० ॥ ५ ॥ बव्वर
रायै मोकल्या दांन लेवानै काजै रे। सेठगिणै नही तेहनै सुहड़तणै बलगाजै रे ॥ ६ ॥ बव्वर
पतिनै वीनव्यौ आवीलागति मांगै रे। सेठ सुरीतैद्यै नही क्रोधा गनि तवजागै रे त० ॥ ७ ॥
बव्वर पति सुहड़ां भणी हलकार्‌या जुधमंड्यो रे। सेठ सुहड़नासी गया कायर थया बलछंड्यौ
रे त० ॥ ८ ॥ बव्वरपतिनी जय थई धवल सेठ बंधाणौ रे। कुमर कहै सऊताहरा किहां गया ३८
कुलगाणा रे त० ॥ ९ ॥ ऊं छोड़ाकुं उफभणी तौ मुझनै स्युं आपै रे। अरधमाल वाहणतणौ
हाथो हाथै थापै रे त० ॥ १० ॥ बोल बंध लेई करौ विचि परमेसर दीधो रे। ढाल थई गुण

तीसमी कहै जिन हर्ष इम कीधो रे त० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ४८६ । दूहा । तव घणु तूण धरी करी केडैधस्यौ कुमार । बोलाव्यौ महाकालनै जाइस किहां गिमार ॥ १ ॥ कायरजो पीगरजीयौ पिण माहरो बलजोइ । नासिम जाइ सिरा कज्यु जोऊ ज्यो होइ ॥ २ ॥ वयण सुणी पाछो वल्यौ मनमा नाण्यौ बीह । वाघुकार्या किम रहै साहसीक नरसीह ॥ ३ ॥ कहै वयण इम कुमरनै रेरे भोलावाल । मुझसौ जो कांकल करिस पामिस मरण अकाल ॥ ४ ॥ काइ मरै रे बालूया परकज्जै वेकाम । कुमर कहै मांटी अछै तौ करि मुझ सुं संग्राम ॥ ५ ॥ ढाल ३० चक्योरिण झूझूवाचंड प्रद्योत नृप ॥ आवीयो ताम करि जोरि बलफोरतौ बव्वराधीस मन-रोस आंणी । सुभट थटविकट साथे करी आंपणा रोस चढीयो वदै असुभ वाणी आ० ॥ १ ॥

आविरि मूढ़जो रूढ़ मेल्है नही आज म्हगराज सूतौ जगाड्यौ। धरण धूजावतो सामह्यो आवतौ छेह धरिलोह सुहडे ऊडाड्यौ आ० ॥ २ ॥ धरणि धड़धड़िय गड़गड़िय दमा मधुनि दहदिसे परवर्या सवलसूरा तुरंग भलयापर्या सहस्र हाथे धर्या नाचता माचता रणसनूरा आ० ॥ ३ ॥ बांण वरसै घणा सुहड़ हाथा तणां गयण रविरयणि अंधार कीधो। भाटभड़उछली सबलपांडां तणी कुमरनैं जे प्रथमघाव दीधो आ० ॥ ४ ॥ झूझतौ सवुदल सूड़करतौ प्रबल गाजतो गाज आवाज करतौ। केविकेवी हण्या सीस दूरै लुण्या अंग उछ रंग धरि जंग फिरतो आ० ॥ ५ ॥
अधिक वाचाल मछराल श्रीपाल इम घावघमसांण हैरांण कीधा। घावठामेरुहिर त्रिंनधारा पड़े अरितणा जीवकण काढ़ि लीधा आ० ॥ ६ ॥ इम लड्यो आथड्यौ कुमर अरसैन्य स्युं बब्बरा-

घीस ततकाल गाध्यौ। वंदि करि आपणा साथ मै आणीयो सांमहो कियहीं नवितीर सांध्यो आ० ॥ ७ ॥ धवल छोडावीयो कुमर बंधण थकी कोप करि षडग धरि राय कोडै। मारि वासं- चर्‌यो सेठ वार्‌यौ कुमर गांधीयो मारता सुजसफोडै आ० ॥ ८ ॥ राय महाकालनै अभय देई करी सहस दस धवलना सूहडसरा। जेहना ठाकुता कुजस आवीपता इत्तिछेदी कीया सह दूरा आ० ॥ ६ ॥ कुमर राष्या सहु इत्ति देई बहु आढीसे पोतनो माल लीधौ। एतलैए थई वीसमी ढाल तिमकांमजिन हरषए कुमर कीधौ आ० ॥ १० ॥ सर्वगाथा ५०१ ॥ दूहा ॥ बब्बर नृप आदर करी कहै कुमरनैएम। पावन मुभपुर कीजीयै जिमवाधै मनप्रेम ॥ १ ॥ कुमर सकल परिवारसुं पहुतौ नगर मभार। प्रेमप्रीति हितसुं मिल्या वाधी प्रीति अपार ॥ २ ॥ करजोडी

राजा कहै मुझ कन्या गुणवन्त। मदनसेना नामै निपुण परणौ साहसवन्त ॥३॥ परदेशी नवि ओलषैं न्यांति पांति कुलसील। अणजांण्यौ परणावतां थास्यै तुम्ह चोहील ॥ ४॥ नृप भाषै आकारथी मै जांण्यौ कुलसुद्ध। तिण परणावुं न्दीकरी थाये केम विरुद्ध ॥ ५॥ ढाल २१ ढाल मुषनै मन वालहे एहनी ॥ परणी तिहां नृपकन्या जी सुषनै कारण एतौ मदनसेना ढात गुणया जी सुष०। मणिमाणिक सोवन दीधाजी सुष०। प्रीति रायण कुमरै लीधाजी सुष० ॥ १॥ नाटकना नव नव छन्दाजी सुष०। आप्या धरि अधिक आणन्दाजी सुष०। नृप साथि ४० थई वोलावैजी सुष०। हिवै प्रवहण जलनिधि चाल्याजी सुष०। कांई रतन दीप भणी माल्या जी सुष। वाहण जई दीप उतरीया जी सुष०। सहु लोका बिन्दर सञ्चरीयाजी सुष० ॥२॥

भला डेरा ताणि उतड्याजी सुप०। तिहां कुमर रहै सुपसड्याजी सप०। इणि अवसर एक नर आयोजी सु०। आदर देई बोलायोजी सु० ॥ ४ ॥ किहांथी आया किहां जास्यौ जी सु०। कोई दीठो अजलतमासो जी सु०। ते पुरष कहै तिण ठांमैजी सु०। नयरी नर सञ्चया नांमै जी सु० ॥ ५ ॥ विद्याधरछै तिहां राजाजी सु०। काई कनककेतु दिवाजाजी सु०। कनक माल तसु राणीजी सु०। मयण मजूषा कन्या जांणीजी सु० ॥ ६ ॥ सकल कला गुण ग्याताजी सु०। जाणसै छय घडी विधाताजी सु०। तिहां ऋषभदेवनो देहरोजी सु०। जांणै भूमिरमणि सिरसेहरोजी सु० ॥ ७ ॥ विद्याधर राय सदाईजी सु०। पूजै निज मन तन लाईजी सु०। नृपकन्या पूजघणावैजो सु०। सऊ देपीनै सुपपावैजो सु० ॥ ८ ॥ इक दिन नृप पूजा दीठोजी,

सु०। राजानै लागै सीठोजी सु०। एसरिषो वर कोई जोऊं जो सु०। तेहनैए कन्या दोऊ
जी सु०॥ ९॥ इक दिन जिन पूजी कुमरीजी सु०। गुंभारा थोनीसरी कुमरीजी सु०। तत
षिण बार जड़ाणाजी सु०। सकुलोक थया हैरांणाजी सु०॥ १०॥ कुमरी कहै आतम निन्दा
जी सु०। धिग धिग हुं पापणि मन्दाजी सु०। मुझमे कोई दूपण दीसैजी सु०। आसातन
विसवा वीसैजी सु०॥ ११॥ इम दुष करि कन्या रोवैजी सु०। नृप कुमरी सनमुप जोवैजी
सु०। राजा कहै सांभल बाईजी सु०। तुं चिन्ता मकरिसि काईजी सु०॥ १२॥ इहां दूपण
तुझ नविकोई जी सु०। अ ।। रन तुझथो न विछोईजी सु०। एकवीसमी ढाल थई पूरीजी सु०
जिन हर्ष कथाछै अधूरीजी सु०॥ १३॥ सर्वगाथा ५९९॥ दूहा॥ राय कहै सांभलि सुता

दूहां दूषणछ सुज्झ। जिन गृहमा मनमै धरी चिन्तावरनी तुज्झ ॥ १ ॥ सावद्य ए आसातना तेह तणा फल जाणि। बारजडांणा एसही ते तलै थई सुरवाणि ॥ २ ॥ दोसन कोई कुमरि यह नरवर दोसन कोइ। जिण कारण जिण हरजडिउ तंनि सुणौ सहु कोइ ॥ ३ ॥ जसुनर दिट्ठै होहिस्यै जिण हर मुक्त दुवार। सोइ ज मयण मंजूसि एह होएसै भरतार ॥ ४ ॥ सिरि रिस हे सरओलगणि ऊं चक्केसरि देवि। मासब्भिंतरित सुनरह आणसु निस्चयलेवि ॥ ५ ॥ राज लोक सहु हरषिया आया सहु कोई गेह। दिन दिन आवी देहरै लोगराइ निरषेइ ॥ ६ ॥ ढाल ३१ मोरो मनमोह्यौ इण डूगरै एहनी ॥ आज दिन मसनौछे हलो जो हिवै तुज्झ थकी वार रे। जघडै तो मिली देवनी वाणि साचो निरधारि रे आ० ॥ १ ॥ कुमर असवार थई तिहा गयो

 साथि परिवार अपार रे। आवीया लोक नृपसुता हरष धर मनह्ममझारि रे आ० ॥२॥ आवतां
 तुरत जिन गृहतणा उघड्या झटकि किमाड़ रे। कुमर जिनराय जुहारीया भगति बहु भांति
दिषाड़ि रे आ० ॥ ३ ॥ राइ मन लाइ देषी रह्यौ नृपसुता थई वसि प्रेम रे। देवि दापित नर
एसहो एह अमूलिक हेम रे आ० ॥ ४ ॥ राइ पूछै कहौ निज चरी ठांमनैं नांम कुण गांम रे।
कुमर चिंतै सुष आंपणै किम कहुं वात निज नांम रे आ० ॥ ५ ॥ चैत्यजुहारिवा आवीयौ ततलै
चारण साध रे। देव जुहारि बैठौ तिहां मुनिवर चित्तसमाधि रे आ० ॥ ६ ॥ धरम देसण नृप
सांभली नवपद नौ अधिकार रे। एहथी वंछित पांमीयै जेम श्रीपाल कुमार रे आ० ॥ ७ ॥
कवण श्रीपाल नरवर कहै एह बैठौ तुम्ह पास रे। चरित्र सहु पूछीया कुमरना मुनि कह्या

धरिय उलास रे आ० ॥ ८ ॥ राय कन्यावर एऊवै लेस्यै निज बापनौ राज रे। देवतणी गति पामिस्यै वली लहिस्यै सिवराज रे आ० ॥ ८ ॥ इम कही मुनिवर पांगर्‌यो नृपसुता कुमरनै दीध रे। पांणिगृहण करी तिहा रहै सऊ मनवंछित सीध रे आ० ॥ १ ॥ इक दिन कुमर राणा विन्हे जिनवर भगति उदार रे। रंग मै भंग आव्यौ तिहां तेतलै नगर तलार रे आ० ॥ ११ ॥ ते कहै स्वामि अवधारीयै वणिक इक कपट नौ गेह रे। आंण भांगी प्रभुताहरी दांण चोरी पड्यौ तेह रे आ० ॥ १२ ॥ तेहनै दंड स्युं आपीयै राय कहै हरौ प्राण रे। एतलै ढाल बत्रीसमी थई जिन हर्ष प्रमांण रे आ० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ५३७! दूहा। कुमर कहै किम दीजीयै जिन मंदिर आदेस। प्राणहरण पातिक वरण कुगतिहरण सुविसेस ॥ १ ॥ बंधन छोडा

वीकरी तेड़ाव्यौ नृपपासि। धवल सेठ साथ्यातए ऐऐ लोभप्रकाश ॥ २ ॥ छोड़ाव्यौ तिहां सेठनै
कीधो तसु उपगार। पुन्यपसायै भोगवै दिन दिन सुपश्रीकार ॥ ३ ॥ कुमर चलाऊ हिव थयौ
राय जणावी वात। बेटी कुमर चलावीया प्रवहण सभी विष्यात ॥ ४ ॥ मणि माणिक मोती
घणा आव्यौ माल अपार। राय बोलावी कुमरनै घरि आव्यौ सुविचार ॥ ५ ॥ ढाल ३३
कंत तमाकू परिहरौ एहनी ॥ कुमर सेठ एक वाहणै बीजा बीजै पोत। मोरा लाल वे रमणी
जांणे पदमणी ऊयर हीयौ उद्योत मो॰ ॥ १ ॥ कु॰ धवल अधम देखी करी चिंतै चित्त मझार
मो॰। ए रिद्धि ए नारी लहो अपछरनै आकार मो॰ ॥ २ ॥ कु॰ विरह वियोगै आंकलो अंतर
व्याप्यौ दुष मो॰। नयणी नावो नींदड़ी भागी तिसनै भूष मो॰ ॥ ३ ॥ कु॰ च्यारि मित्र तेड़ी कहै

दैपौ एहनी रिद्धि मो०। ए सुंदर दोइ सुंदरी इण पांमी नवनिद्धि मो० ॥४॥ कु० गुपत वात तुमे राषि ज्यौ किणहि मकहि स्यौ गूझ मो०। एहनै नाषी जलधि मैं एनारी द्यौ मूझ मो० ॥५॥ कु० तिण जण सेठ भणी कहै एस्यं वोल्या बोल मो०। परउपगारी एहना गुणनो नही कोई मोल मो० ॥ ६ ॥ कु० वाहण चलाव्या ताहरा कीधो तुझ उपगार मो०। विद्याधर महाकाल थी छोडाव्यौ तिणवार मो० ॥ ७ ॥ कु० ते गुण तुझनै वोसर्या इणि उपरि धर्यौ द्रोह मो०। दुरजन तुझ सरियो न को मिवनौ नाख्यौ मोह मो० ॥ ८॥ कु० यतः। सैलावांका चालता विषमय भीषण देह। पीरपावं ता पिणडसै सही दुर्जोहा तेह ॥ १ ॥ मुह कडूआ अतिनीरसा छाडै पूरव नेह। मलिन सभाव धरै सदा पल जाणीजै तेह ॥ २ ॥ सविसडसै विरसा मसै

फिरता सूं धै देह। अवसर ताकै आपणौ खान समाखल तेह ॥ ३ ॥ मीठा पिण मीठा सुखै परिणामै दुषहेत। मह्ररा परिति छाड़ीयै दुषरंजन दोष समेत ॥ ४ ॥ ढाल। क्ुनषन तुं महापातकी तुझनै पड़ौधिकार मो०। इम कहि विण ऊठी गया एक रह्यौ तिण वार मो० ॥ ९ ॥ कु० ते कहै स्वामी सुणौ एहसुं केही वात मो०। गुण अवगुण न विजाणीयै कलीयै नही जसु घात मो० ॥ १० ॥ कु० ऊं सोषो छु ताहरो अवरन सोषी कोइ मो०। कांम करि सह्र ताहरो जेह्रै सुझ थी होइ मो० ॥ ११ ॥ कु० भाग्य तुमारौ सेठजी बुद्धि हमाहरी जांणि मो०। थास्यै ढाल तेवीसमी कहै जिन हरष कल्याण मो० ॥ १२ ॥ कु० सर्वंगाथा ५५५। दूहा ॥ धवल कहै धीरज धरी तुं सुझ वाल्हौ मित्र। तुझ थी सह्र सारुं ऊस्यै ताहरी बुद्धि विचित्र ॥ १ ॥

तेह कुबुद्धी इम कहै धवल भणी तिणि वार। करि ज्यौ प्रीत विसेष थी सीपा साथ विचार ॥२॥ मोठे वयणे रिंझावी उपजावे विसवास। जिम तिम दुसमण मारीये थई तेहना दास ॥ ३ ॥ कपट प्रीति कीजै प्रथम दीजै निज विसवास। अवसर पामी शत्रुनौ ततषिण कीजै नास ॥ ४ ॥ बुद्धि सीपवी धवल नै तिण पांभो मतिहीण। रलीयायत धवलौ थयौ जांण्यौ एह प्रवीण ॥ ५ ॥ ढाल माहरागे जीरावल पुरसामीस लहीये एहनी ॥ धवल कहै हिव केलि अहोनिसि कुमर सुं रे। मन मै कपट धरंत हसतो रेरे रमतो वयण इसा कहै रे ॥ १ ॥ तुझ मुष देषी माहरी आंपडीया ठरै रे। हीयडो हरष भराय वाल्हा रेरे तुझ विण माहरै किस सरै रे ॥ २ ॥ तुझ सुं लागी प्रीति अधिक मन माहरै रे। विणदीठां न सुहाइ माहरूं रे माहरूं मनडुंवस थयु

ताहरै रे ॥ ३ ॥ भद्रक कुमर घरो करि जांण्यौ तेहनै रे। भेला रहे निसदीस कारज रे कारज पायै जेहसं जेहनै रे ॥ ४ ॥ निसि भरि सेठ कहे भाई सुणि माहरै रे। आवि दिपालुं प्याल जल मांरे२ जलमांणस जाइ तिर्या रे ॥ ५ ॥ सरल सभावी आव्यौ तुरत कुमर तिहां रे। सेठ कहै इणि डोर चढ़िनैरे२ जोवो आवीनै इहां रे ॥ ६ ॥ जोवन्ता पापी कापी ते डोरड़ी रे। जलधि पड्यौ श्रीपाल पड़तां रे रे नवपद जपीया तिण घड़ी रे ॥ ७ ॥ मगर मच्छ पूठै ते ध्यान थीरे। जल तारणी परमांण जलनारे२ सङ्कट न ऊवै तेहथीरे ॥ ८ ॥ पाषलि सुभट वणा दैपै जागैतबै रे। विनय करी कहै तेह अमरनैरे२ वसुपाल नृप मूं क्या अछैरे ॥ ९ ॥ तुरी पलांणौ चाबक हाथे संग्रह्यौ रे। चढि चाल्यौ श्रीपाल वसुपालरे२ राजा आव्यो सांमुह्यौ रे ॥ ११ ॥

आसण वैसणदेई कुमर भणी कहेरे। अम्ह घर जोसी एक तेहनैरे२ पूछ्यौ कन्या कुण लहैरे॥१२॥ मदनमञ्जरी बेटी मुझनै वालही रे' ए सरियौ वर जोइ तौ मुझरैतौ मुझ मन आस्या पूगै सहीरे॥१३॥ ढाल थई एतलै पूरी चोवीससमीरे। कहै जिन हरष निहाल चित्तारे२ कुमर तणी सगली गमीरे॥१४॥ सर्वगाथा ५७४॥ दूहा॥ सुदि दसमी वैसाषनी पहुर पाछिले जोइ। सायरतटि चंपातलै सूतो ते वर होइ॥१॥ वयण मिल्यौ जोसीतणौ परणौ कन्या एह। लगन देई वसुपाल नृप परणाव्यौस सनेह॥२॥ राय कहै कोई काजल्यौ रापौ माहरो मान। घई या यत कामो खोयौ राय अपावै पांन॥३॥ धवल कुमरनै नापिनै मायामाडी भूरि। रोजे पीटै सडसडै मनमा वाध्यौ नूर॥४॥ सीपा नारि भणी कह्यौ तुम्ह पति थयौ

जलपात। जो नरहीं जगदीसस्युं पिण मित्र विना न सुहात ॥ ५ ॥ ढाल ३५ यत्तिनी राग सोरठ ॥ प्रीजर करि मयणा रोवैं जूथभ्रष्ट म्हगी परिजोवै। सांभलि प्रीतम गुणवन्ता अमचौ कुण करिसी चिन्ता ॥ १ ॥ अधिविचि छोड़ी गयौ अम्हनै करुणा नांवी कांइ तुम्हनै। अम्हे अबलानै एकलड़ी परमेसर अम्हनै वीछड़वी ॥ २ ॥ दूहा ॥ विनड़ी दैवै अम्ह भणी छोड़ी प्रिउ निरधार। दुष सायर मांहे पड़ी किम पामुं हिवै पार ॥ ३ ॥ चालि ॥ यामुं किण पर दुष पार प्रीतम पाषै करतार। चोड़ी गयो नाहनवीनो छाहा गयो नाहनवीनो ॥ ४ ॥ हीय
ड़ाना दुष किण आगै कहीयै कोई दुष न भागै। मनमोहन नाह मिलावै मुह मांगी वधाई पावै ॥ ५ ॥ दूहा ॥ पावै अबला दुष घणौ वाल्हे सर करि सारि। किण साह्मेली गया एक

लडी निरधार ॥ ६ ॥ चालि ॥ निरधार कह्यो किम कीजै प्रीतम विण केमरहीजै। दरीयौ लागै दुपदाई उदयागत अधम कमाई ॥ ७ ॥ परभव कोई पातक कोधा परतिष तेहना फल लीधा। निरदोस पराई जाई छोडंता मंहिरन आई ॥ ८ ॥ दूहो ॥ महिरन आवी प्रीतमा हे शनकी मनमाहि। जो मनमां एहवु हतुं तौ चउंरी चढीयौ काइ ॥ ९ ॥ चालि ॥ चवरी अमची तुं चढोयौ दचणकर करसुं पकडीयो। ते बोलदीयो वीसारी परणी छोडी निरधारी ॥ १० ॥ वाट जोस्यै कमला माइडी आव्या छौविचमै छाडी अम्हनै इहा आणी नांपी झूरै पंप विणि जिम पंषी ॥ ११ ॥ दूहा ॥ पंषो जिम विण पंषडी फोरी न सकै प्राण। प्रीतम दरीया मे पडौ कीजै किसौ विनाण ॥ १२ ॥ चालि ॥ हिवनाण विनांण न सूझै छाती धड

हड़ द्रुम धूजै। अम्ह थी दादुर गुण जांण पांणी सरजाजसु प्रांण ॥ १३ ॥ पीहर तौ पर गट
श्रीपा०च० रहीया प्रीतम विरहा गनि दहीया। प्रमदा दूखि परिविलवन्ती दुष रोई राति गलन्ती ॥
४७ १४ ॥ दूहा ॥ राति गलन्ती तिमरड़ी पाहण फट्टै जेह। पिणि हीयड़ौ फाटो नही थयौ कठिन
विरहेण ॥ १५ ॥ चालि ॥ प्रिय विरहवियोगै पीड़ी वलिसेठ कुद्रिष्टै भीड़ी। पांमै नही किमही
थाग निज प्रीतमसुं बहुराग ॥ १६ ॥ सतीयां निज सील सपाई तेहनै तौ चिन्ता कांई।
जिन हरषदेव वरदाई पांत्रीसमी ढाल सुहाई ॥ १७ ॥ सर्वगाथा ५८६ ॥ दूहा ॥ इम विल- ४७
वन्ती सुन्दरी रोवन्ती नर हाइ। धवल अधरमी तिण समै भासै पासै आय ॥ १ ॥ हे सुन्दर
तुम्हे सांभलो मकरो मनमै षेद। ऊं तुम्हनै सारी परै रापिसिवणौ उमेद ॥ २ ॥ विधि विल-

मित अहिलो नही नही केहनो जोर। पिण सुभ वयण मलोपि सो तुमनै करुं निहोर ॥ ३ ॥ वयण सुणी मयणा निन्हे जाण्युं एहना काम। सायर मा प्रिउ नापीयो रही अबोली ताम ॥ ४ ॥ ढाल ३६ वाणगि वाउली रे जसोदा फौजा पाछी वालि एहनी ॥ इण अवसर गयणंगणै रे मिलीयौ घनघोर अंधार देवि चक्के सरीरे। मयणानो वाहिरि आइजी धाई वाहर आई धाइनै लागीनही काईवार दे॰ ॥ पवनचिउं दिसि उपड्या सायर कलोल अपार दे॰ ॥ १ ॥ जल-निधिना जलऊनल्यारे ऊधाणचल्या असमा न दे॰। वाहण लागोडोलिवा जांणे चंचल पींपल पांन दे॰ ॥ २ ॥ वीज भलामल भलहरै रे वीहावतोवाल गोपाल दे॰। घोर अंधार करिउं नम्यौ जलधर वरसै असराल दे॰ ॥ ३ ॥ लोलकल्लोल हिलोलतो वाजै दधिगाजै पूर दे॰। लोक सोक

भय उपनौ कायरथयांसूरविनूर दे० ॥ ४ ॥ षांडाहत्यउ भैरवो करडमकूनै डाक दे० । तिण
अवसर प्रगढ्यौ तिहां आव्यौ मारंतौ हाक दे० ॥ ५ ॥ मांणभद्र बीजो वली पूरणभद्र कपिल
सरीर दे० । पिङ्गल चोथो दीषोयो रे सिद्धचक्र नाच्यारे वीर दे० ॥ ६ ॥ मोगर हाथे साहिया
अन्याई करै चकचूर दे० । सेवक श्रीजिन रायना प्रगट्य जांणे अंकूर दे० ॥ ७ ॥ कुमद अंजण
वलीवामणौ पुष्पदन्त चौथौ सुरनांम दे० । दण्डधरा अति आकरा पड़ीहार च्यारे अभिरांम
दे० ॥ ८ ॥ हाथे चक्र भमाडतो झलकन्त अत्यन्त उद्योत दे० । वयण इसा मुष भाषतौ प्रग- ४८
टीच केसरिनी जोति दे० ॥ ९ ॥ रे रे वीर एहनै ग्रहौ दुरबुध प्रथम इण दीध दे० । ए पापी
हणिवौ सही अनरथ जिण ए हवो कीध दे० ॥ १० ॥ वीरे झालो बांधीयो अवलंब्यो कूवाथंभ

दे०। ऊधे मुप दुषीयौ कीयौ हणीयौ फल पाम्यौ दंभ दे० ॥ ११ ॥ भयै चकित धवलौ भणै तुम सरणै मयणा माय दे०। राषि राषि मारण थकी मैं झाल्या ताहरा पाय दे० ॥ १२ ॥ निज गुण सांम्हो जोइज्यौ म्हाहरा अवगुण मनिहाल दे०। उत्तम गुणकारी हुवै जिन हरष छवीसमी ढाल दे० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ६१३ ॥ दूहा ॥ ताम चकेसरि इम भणै रे पापिष्ट अनिष्ट। मैं तुझ मुं क्यौ जीवतो मयणा सरणिपविष्ट ॥ १ ॥ दोइमणा करि जोडिनै भाषै विनय विसेष। सारकरी माता तुम्हे विसमै अवसर एण ॥२॥ देवी वाक्यं। वच्छावल्लह तुम तणौ मिलई रिद्धि समेउ। मासब्भितर निच्छइण मिलस्यै धरै सपेम ॥ ३ ॥ एम भणै विणु चक्कहरि परमल गुणह विसाल। मयणह कण्ठै परिठवै सुरतरु कुसमह माल ॥ ४ ॥ तुम्मह दुष्ट न देषिस्यै

मालह तणै प्रमांण। एम भणै विणु चक्कहरि देवि गई नियठांण ॥ ५ ॥ ढाल २७ ते मुझ
लिच्छामि दुक्कडं एहनी ॥ हिवै वाहण कुंकण जई कतरीया जांम। धवलो भलो लेई भेटणौ
भेट्यौ राजा तांम हि० ॥ १ ॥ राय षुसी थई सेठनै दिवरावै पांन। थईया यतनै ओलप्यौ थयौ
हीयडै हैरांन हि० ॥ २ ॥ ए नीकल्यौ किम जीवतौ वैरी विकराल। वली मुझ थी अधिको
थयो हीयडै उठी झाल हि० ॥ ३ ॥ कोई उपाय करुं हिवै जिमरूसै राय। एहनै जीव रहित
करै आव ठटलि जाय हि० ॥ ४ ॥ डुम्बकटुब आव्यौ तिहां सेठ आदरदीध। कांम कह्यौ करि ४९
सुं अम्हे सवा लाष धनलीध हि० ॥ ५ ॥ राय जमाई जो हणै धनद्यों सवाकोड़ि। डुम्ब भणै
ए सोहिलुं कांम करिसुं दोड़ि हि० ॥ ६ ॥ रावलै डूंब जई करो गाया भला गीत। वली

विसेपै ते दिनै रीझ्यौ राय चीत हि० ॥ ७ ॥ नृप तूठो बीडा दीयै गायन न लीयन्त । राय जमाई सैहथै लीउं जौ दीयन्त हि० ॥ ८ ॥ हुकम दीयो श्रीपालनै वसुपाल नरिन्द । बीडा दै वानै गयौ नविजांणै फन्द हि० ॥ ९ ॥ गायन सहु टेपी करी सीपा कंठ विलग्ग । एकभणै पुत्र ओलप्यौ दूमरोवालग्ग हि० ॥ १० ॥ एक कहै भाई मिल्यौ बहु दिवसे आज । नारि थई इकडूंवणी वैठी करि लाज हि० ॥ ११ ॥ माय थई माया करै रहि रहिहिवैं पूत । भालो वाहवै सारीयौ वलीयो घर सूत हि० ॥ १२ ॥ राजा अचरिज पामीयौ जोवो देव सरूप । ढाल थई सैवीसमी जिन हर्ष अनूप हि० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ६३१ ॥ दूहा ॥ कोप चढ्यौ राजा कहै वाभणडाभु आज । ए कन्या वरदापव्यौ गमी सहुमै लाज ॥ १ ॥ वली नृप पूछै कुमरनै दाप

 वीयै निज वंस। निजजीभै सीपौ कहै कुल कीजै न प्रसंस॥१॥ चतुरङ्गी सेना सभौ मराडा
 वौ भारथ। तिण वेला तुम्हे जाणि ज्यौ कुललहिस्ये मुझ हाथ॥३॥ अथवा प्रवहण मांहिछै
दोइ नारी गुणवंत। कुललहिस्यै ते माहरो मिटस्यै मननी भ्रन्ति॥४॥ भूपति तेड़ी नारिवे
मूंकी पुरुष प्रधांन। आवी हीयडै ऊमही पूछै तव राजांन॥५॥ ढाल ३८ कोइ लोयरव्रत
धूधलोरै एहनी॥ वोली तव विद्याधरी रेलो अङ्गदेस भूपालरे राजेसर। सिंहरथ राय कम
लातणौ रेलो ए नन्दन श्रीपालरे नरेसर॥१॥ वो० पूरव वात सहु कहो रेलो एहनी छुंवे
अम्हे नारिरे न०। नृप सुणि अचिरिज पांमीयौ रेलो पांम्यौ चितचमकाररे न०॥२॥ वो०
ततषिण बांध्या डुम्बडारेलो दीधी मार अपार रे न०। ऊकम कीयौ हणि वातणो रेलो गा-

यन वोल्या तिण वाररे न० ॥ ३ ॥ बो० वांक अम्हारो को नथीरे लो सगपण पिण नही कोइ रे न० । धवल अछै एक वाणीयौ रेलो पापीमां धूरि होइरे न० ॥ ४ ॥ बो० धन आपी अम्हनै घणो रेलो एह कराव्यौ काजरे न० । षोटौ बोलीजै किसुं रेलो तुम्ह आगलि महाराजरे न० ॥५॥ वो० राय भण्यौ रीसै घणु रेलो पाठवीया निज दूतरे न० । धवल भणी बांधी करीरेलो लेवातुरतप ऋतरे न० ॥ ६ ॥ बो० बांह अपूठी बांधिनै रेलो लायावेग तलाररे न० । वाहोवार मलाविसोरेलो धवल तणौ सिरधाररे न० ॥ ७ ॥ बो० मारन्तो छोडावीयो रेलो करुणा करि श्रीपालरे न० । वछीया यत ए वांणीयो रेलो हणीयै किम भूपालरे न० ॥ ८ ॥ वो० बन्धन थी छोडावीयौ रेलो दिवराव्यौ सनमांनरे न० । सापुरस रीस धरै नही रेलो वलिन करै अलि

मांनरे न० ॥ ९ ॥ बो० विलसै मयणा सुष भोगवै रेलो सुष गमता निसदीसरे न०। कुमर
प्रताप निहालनै रेलो सेठ धरै मनरीसरे न० ॥ १० ॥ बो० कुमर सूतो भूमि सातमी रेलो वलो
मांड्यौ मनद्रोहरे न०। निसि भरि बांधो डोरडी रेलो मूकी चन्दन गोहरे न० ॥ ११ ॥ बो०
हणिवा कुमर भणी चढ्यौ रेलो पालीकर संबाहरे न०। पाली सहित पाछो पड्यौरे पूती
होयडामाहिरे न० ॥ १२ ॥ बो० ततषिण प्राण तज्या तिहांरे लो धवल गयौ जमलो करे न०।
देषी सहु कहै एहवौ रेलो पातिक नडवै फोकरे न० ॥ १३ ॥ बो० माठी करणी थो हूणे रेलो
फलपांम्या ततकालरे न०। कहै जिन हर्ष भलै तलौ रेलो कहै अडत्रीसमी ढालरे न० ॥ १४ ॥ ५१
बो० सर्वगाथा ६४९ ॥ दूहा ॥ क्रोध लोभ श्रीपालना मनमांनही लिगार। प्रेतकार्य्य करि धवल

लनो कीधो ईम उपगार ॥ १ ॥ तेडीनै आसासना सेठ पुत्रनै दीध। पिता तणौ धन आपीयौ लोका मै जसलीध ॥ २ ॥ कोसंबीसं प्रेडीयौ उत्तमनी ए रीति। पीर नीर जिमसा पुरस पाले पूरी प्रीति ॥ ३ ॥ ढाल ३९ नणद लहे नण० चूडलै जोवन झिल रहियौ एहनी ॥ साजन हो साजन इक दिन रय वाडी गयौ सीधौ मनसे रङ्ग। साजन सेवक साथि लेई करी वैसी चपल तुरङ्ग सा० ॥ १ ॥ पुन्यकथा तुम्हे सांभलो पुन्यकीयां आणंद सा०। कष्टटलै संपतिमिलै जिम श्रीपाल नरिंद सा० ॥ २ ॥ पु० आगलि वनमां उतर्‌यौ दीठो सारथ वाह सा०। पूछ्यौ कुमर कि हायको आव्या किण पुर मांहि सा० ॥ ३ ॥ पु० अचिरिज कोई निहालीयौ काई अपूरव बात सा०। तिह कहै कातीनै थकी आव्यो सुणि वडगात सा० ॥ ४ ॥ पु० इहां थकी

श्रीपा० च० सी जोयणे कुणडल नगर वसन्त सा०। मकरकेतु राय रागिनी कमल तिला गुणवन्त सा० ॥५॥
५२ पु० गुण सुन्दरी तेहनो सुता विद्या रूप प्रसाद सा०। परणै नर ते मुझ भणी जीपै वीणावाद
सा० ॥ ६ ॥ पु० नरपति नन्दन बहु मिल्या सीषै वीणा चाल सा०। वात इसी तिण नर कही
घर पुहुतौ श्रीपाल सा० ॥ ७ ॥ पु० ते अचरिज जोइ वा भणी लागी मनसै पन्त सा०। भाव
धरी नवपद जपै तन मन करि एकन्त सा० ॥ ८ ॥ पु० नवपद भगत परतख थयौ श्रीविमलेसर
यख सा०। तूठौ सीपानै कहै मांगि२ वरदख सा० ॥ ९ ॥ पु० गुणरंज्यौ सीपा भणी श्रौनै
निरमल हार सा०। पहिर्यौ कण्ठ मोहन करै जाये जिहां आंण हार सा० ॥ १० ॥ पु० ५२
हार तणी महिमा कही सुरपहुतौ निज ठांण सा०। कुमर गयौ कुणडलपुरै पहिरी हार सु-

जांण सा० ॥ ११ ॥ पु० रूप रच्यौ वामन तणौ गयो आषाडा साज सा० । भणिवा पाठक तुम्ह कने ऊं आव्यौ छुं आज सा० ॥ १२ ॥ पु० वीण कला सुष सीषवौ मुझने पिण छै ऊंस सा० । राजि कुमरिनै रीझवुं नापु मगज विधुंस सा० ॥ १३ ॥ पु० नृप नन्दन हडर हस्या बोल्यो वामणसाच सा० । ऊंस करै वरिवा भणी किहा कञ्चण किहां काच सा० ॥ १४ ॥ पु० राय कुमर आवौ मिलौ माहरै पासै आस सा० । राजकुमर तेड्या सहू मुझरोले वा काज सा० ॥ १५ ॥ पु० वामण पिण साथै गयौ गुण सुन्दर आवास सा० । ढाल ए उगणचालीसमी कही जिन हरष उलास सा० ॥ १६ ॥ पु० सर्वगाथा ६६८ ॥ दूहा ॥ वीणा सुर सज्झए कर्‌यौ तंत उतार्‌या राग । पिण किणहीना नादसुं कुमरी चित्तन लाग ॥ १ ॥ वीणा मागी वांमणै आपै

 कुमर अचंभ। आरंभ कीधो नादनो थंभ्या सहु जिम थंभ ॥ २ ॥ सहु को देषी वामणो नृप
 कन्या श्रीपाल। कुमरी वरवरि वा भणी कंठठवी वरमाल ॥ ३ ॥ रूप अनूप कीयो प्रगट
चम्पापति तिण वार। मकरकेतु मन हरषीयौ परणावीयो कुमार ॥ ४ ॥ आप्या कञ्चण
मणि रयण आप्या वर आवास। कुमरि तिहां सुख भोगवै वारूलील विलास ॥ ५ ॥ ढाल ४०
प्यारौ प्यारौ करती एहनी ॥ एक दिन रमिवा नीकलीयौ वाटै एक पंथी मिलीयौ। कु-
मरै परदेसी कलीयौ पूछै अचरिज अटकलीयौ हो लाल ॥ १ ॥ कहौ पंथी किहां जासौ
कहां थी आया मुझ भासौ। दीठौ कोई तम्हे तमासौ मुझ आगलि तेह प्रकासौ हो लाल
क० ॥ २ ॥ पंथी कहै चतुर सुजांण, कुंडनपुर नयर मंडाण। आव्यौ तिहां थी सुप्र-

माण जाय सङ्क पुरमय ठाण हो लाल क० ॥ ३ ॥ कणयापुर मांहे आयो राजा विजयसेन कहायौ। राणी कनकमाला मनभायौ जिण पुन्य थकी सुष पायौ हो लाल क० ॥ ४ ॥ त्रैलोक्य सुंदरी तसु बेटी जाणै रूपकला गुण पेटी। पासै रहै सुंदर वेटी मनमी अरति जिण मेटी हो लाल क० ॥ ५ ॥ कन्या थई जोवनवंती दीठी बापै मलपंती। वरजोग्य थई गुणवंती सरषै पूगै मनपंती हो लाल क० ॥ ६ ॥ सयंबरा मंडप मंडाउं सङ्क देसाधिप तेडाउ। इण सरिषौ जो वरपाउं तौ बेटी परणाउं हो लाल क० ॥ ७ ॥ इम चिंत विचित्त सभारा मंडपरचीया विस्तारा। जगमाहे नरसिरदारा आव्या लेई परवारा हो लाल क० ॥ ८ ॥ त्रीस जोयण इहां थी थायै कालहे वरिस्यै मनभायै। सीषौ सांभलि तिहां जायै पंषौ जिम गयण पुलायै हो लाल

क० ॥ ९ ॥ कणयापुर मांहे आयौ षुंधानो रूप वणायौ। अचरिज देषण ऊमाह्यौ देषी मंडप सुषपायो हो लाल क० ॥ १० ॥ प्रतिहार नद्यै पेसेवा हथसंकलो दीयो देषेवा। आयो जिन

हरषवरेवा चाली समीढा कहेवा हो लाल क० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा ९८४॥ दूहा ॥ पूठभाग ऊंचौ घणु ऊरसां कडौ प्रदेस। ऊची नीचो नासिका माथै कपिला केस ॥ १ ॥ पूठै दूवड कूबड़ौ मोटौ माथौ जास। दांत गदहडा सारिषा तेहवा दांत ऊजास ॥ २ ॥ कोढगली वांकी नली पिंजर नयन विसाल। लालपड़ै होठ लड़वड़ै इसो वणायौ गात ॥ ३ ॥ राजहंस समराजवी

बैठा करै कलोल। काग सरीषौ कूबड़ौ आवी ऊभोलोल ॥ ४ ॥ ढाल ४१ श्रीचंद्रा प्रभु प्राहु-णौ रे एहनी ॥ कहौ षूधा नरपति कहौ रे किम ऊभा इहां आज रे। जिण कारण बैठा तुम्हे

रे ऊभोछु तिण काण रे क० ॥ १ ॥ हड हड हसीया राजवी रे रूपवयो वाह वाह रे। तुझ्नु सरिपोयर किहा मिलै रे एह वा राजवीयां माहि रे क०॥ २ ॥ कन्या नरवाहण चढी रे स्वयस्वरकीधो प्रवेस रे। ढोलदमामा वाजीया रे सघर बणाया वेस रे क० ॥ ३ ॥ सीपानो रूप मलगो रे दीपै कन्या तेह रे। प्रमुदित चित्तथयौ घणु रे लागो निवडसनेहरे क० ॥ ४ ॥ तीपे नयणे ताडिनै रे जोवै वारंवार रे। चंवक लोहतणी परै रे मनमिलीयौ तिणवार रे क०॥ ५ ॥ प्रतीहारी आवीहि वै रे लाल बडीले हाथ रे। सयंवर विचमै माजतौ रे राजकुंअरिकरि साथि रे क० ॥ ६ ॥ राजवीयानै ओलषै रे जाणै देस विदेस रे। वंसतणी विरुदावली रे संभलावै सुविसेस रे क० ॥ ७ ॥ छोडि चली सहुराजवी रे जिमभाद्रवडै छांण रे। थंभामूतलीनै सुषैरे

 देव तणीथईवांण रे क० ॥ ८ ॥ तथाहि ॥ यदि धन्यासि विज्ञासि जानासि च गुणान्तरं। तदैमं
 कुब्जकाकारं वृणुवत्से नरोत्तमं ॥ १ ॥ देवतणी वांणी सुणी रे कुब्जगलै वरमाल रे। घाली कन्यायै वर्यो रे मूंकी सहू भूपालरे क० ॥ ९ ॥ धड़हड़ीया कोपै करोरे मांनी नरमूं छालरे। कहतारे रे कूबड़ा रे म्हेलिपरीवर माल रे क० ॥ १० ॥ मूक्यौ मूक्यौ जीवतो रे नहींतोमूं का जमलोक रे। राजसुतानै कारणै रे कांइमरै तुं फोक रे क० ॥ ११ ॥ कांई अदेषा राजवीरे कांइ वड़ोकरो रोसरे। रूप न पांम्यौ जोतुम्हे रे तो केहनो कहो दोसरे क० ॥ १२ ॥ नाकतणाम- लनीपरै रे तुम्हनै तज्या इण बाल रे। आदर मांनदेईपणौ रे मुझ कण्ठै ठवीमाल रे क० ॥ १३ ॥ भाग्य विना किमपांमीयै रे रायसुता सुकमाल रे। कहै जिन हर्ष मपीजिस्यौ रे इकताली समी

ढाल र क० ॥ १४ ॥ सर्वगाथा ७०२ दूहा ॥ एहवा वयण सुणीकरी भडभडीया भूपाल। मारो मारो कूबडो पाडील्यौ वरमाल ॥ १ ॥ इमकहि ऊठ्या मारिवा पुधदिषाड्या हाथ। कायरथ-ईनासी गया मांडे कुण भारथ ॥२॥ पुंध पराक्रम देखिनै विजयसेन राजांन। तब बोल्यौवछ आंपणौ प्रगट करौ बलवान ॥ ३ ॥ रूपकीयौ निजमूलगौ जांणै अभिनव कांम। राजा रलीया यतथयौ कुमरी समवरपांम ॥ ४ ॥ परणावी नृप अंगजा उच्छवकरी अपार। सुन्दर मिंदर आपीया रयण कयण सिणगार ॥ ५ ॥ सीपौवर सुन्दरपवर त्रैलोक्यसुन्दरी नारी। जोडी जोडी सारिषी ऊंसी ऊद करतार ॥ ६ ॥ ढाल ४२ वालु रे सवायौ वयरजं आअणौ रे एहनी ॥ राय सभायै आव्यौ चर एकदा रे कहैनि सुणौ श्रीपाल। देवक पट्टण धणकांचण भर्‌यौ रे रायतिहां

 अथ विचक्षणा पठति ॥ अवर मभंषो आल २। पुत्तलिका कथयति ॥ अरिहंतदेव सुसाऊ गुरु
 धम्मतुदया विसाल। मन्तुत्तम नवकार पर अवरमभंषो आल ॥ २ ॥ प्रगुणा पठति। करऊ
सफल अप्पांण ३। आराहौ धुरिदेवगुरु द्यौसुंपत्तै दांण। तव संयम उवया रड़ो करऊ सफल
अप्पांण ॥ ३ ॥ निपुणा पठति। जित्तौ लिय्यौ निलाड़ि। रे मन अप्पौ षंच करि चिंताजाल
मयाडि। फलतित्तोहौ पामीयै जित्तौ लिष्यौ निलाडि ॥४॥ ततो दक्षणा पठति। तसुतिऊ अण-
जिण दास ४। अच्छि भवंतर संचियौ पुन्नसमग्गल जास। तसु बल तसु मैतसु सिरिय तसुतिऊ
अण जिण दास ॥५॥ कुमर समस्या पूरवी हरषी कुमरी चित्त। एवरसुभ पुन्यै मिल्यौ पूरब भवनौ
मित्त ॥६॥ ढाल ४३ मोतीद्यौनै हमारो राजंदा मोतीद्यौनै एहनी ॥ राजा सुणिरीभौ चतुराई

एवरसरिषी मिलीयौ बाई। जोज्यौ पुन्याईतणा फल जोज्यौ पुन्याई। पुन्याईएश्रावी मिलीयौ जाण अकाले आवौ फलीयौ जो०। पंचसषी साथै नृपबाला सोमाकंठ ठवी वरमाला जो० ॥ १ ॥ राजा परणावी निज कन्या लोकसह्न भाषै एधन्या जो०। पंचप्रकार विषय सुषविलसै पुन्यथकी आस्यासह्न फलिस्यै जो० ॥ २ ॥ भाटभणै आसीस भलीपरि चिरजीवौ महाराय कुमर वर जो० अचिरिज एक अपूरवदीठौ। कोल्लागपुररिद्धि सम्टद्धि अनीठौ जो० ॥ ३ ॥ राय पुरंदर जांणी पुरंदर रांणी विजयादे अतिसुंदर जो०। बेटो गुणपेटी जय सुन्दर रूपै अभिनव रति मति मन्दिर जो० ॥ ४ ॥ कुमरी प्रतीज्ञाकरि रहि थिरता राधा वेधसाधै सोई भरता जो०। बाप कन्यानै कानतेडाव्या दिसि दिसिना देसाधिप आव्या जो० ॥ ५ ॥ पिणते किणही वेधन साध्यौ

कुमरी मन उछाह वांध्यौ जो० । भाटभणीवक्षुदान देईनै कुमर चल्यौ निजहार लेईनै जो० ॥ ६॥
५८ कोल्लागपुर जड़ीनै आयौ राधा वेधसभो सुष पायौ जो० । जय सुन्दरि कन्यावर वरीयौ राय
वीवाह सबल आचरीयौ जो० ॥ ७॥ दोइजणभोलै सुषसायरमै सरिषी जोड़िमिली निज करमै
जो० । तिण अवसर मामा तेड़ावै नरमेलहीनै षबर करावै जो० ॥ ८॥ कुमरै पिण निजपुरष
पठाया नारी तेडण सैन्य बुलाया जो० । बंधु सहित सहु सुन्दरि आई सेना बहुत मिलोमन
भाई जो० ॥ ९ ॥ हयदल गयदल पयदल मिलीयौ चालंतां अहिपति सलसलीयौ जो० । सात-
सायरनो जल झलफलीयौ जायै किणही नहो वलकलीयौ जो० ॥ १० ॥ स्थांनपुरी नयरी ऊत-
रीयौ मातुल निरषि हरषमन धरीयौ जो० । मामैकरि अभिषेक सुदिवसै राजा पट्टीधो मन ५८

हरखै जो० ॥ ११ ॥ पुन्यपसायै लह्या सुषसाजा श्रीश्रीपाल थयौ महाराजा जो० । वेताली समीढाल वषाणी कहै जिन हर्ष वषत नीसाणी जो० ॥ १२ ॥ सर्वगाथा ७३८ दूहा ॥ दसदिसिकेरा राजवी आवीलागा पाय । हय गय कञ्चण मणिरयण लेई भेट्यौ राय ॥ १ ॥ हिवै श्रीपाल नरेसवर लेई सैन्य अपार । चाल्यौ उज्जेणी भणी मिलिवा जननी नारि ॥ २ ॥ विचिसोपारै पाटणै जई दीधौमेल्हाण । परदल आव्यौ जांणिनै राय मल्यौदीवांण ॥ ३ ॥ श्री श्रीपाल नरिन्दनै आवीलागौ पाय । करजोडीनै वीनवै स्वामी करौपसाय ॥ ४ ॥ महीसेन नृपकुंअरी डसीयौ अङ्ग भुयङ्ग । तिलक सुन्दरी विषभरी तिण दुषराय भयंग ॥ ५ ॥ समसाणै ते लेगया दुषीपिडित भूपाल । तुम्ह मिलिवातिणिवासतै नाव्यौ अहो क्रपाल ॥ ६ ॥ ढाल ४४

 परदेसीयारमेरी अंषीया लगी एहनी ॥ परउपगारी साहसधीर समसाणै मोहतौ वड़वीर । उप
 गारी लालताकै पायनमीजै । नयणे मुषदेषालौ बाल एजीवाड़ी सज्ज तत काल उ० ॥१॥ पायनमी
जै ताकी सेवाको जै उ० । आ० दीठीकन्या मृतक समान महामंत्रनौ कीधो ध्यांन उ०॥२॥ कुमरी
कण्ठे ठवीयौ हार ततषिण बैठीथई तिणवार उ० । विष ऊतरीयौ निरविष प्रांण वाज्या हरष
तणा नीसाण उ० ॥ ३ ॥ राजा महीसेन हरष्यौ अपार भेटकरे मणिरयण भंडार उ० । पर
णावी निजकन्यातेह तिलक सुन्दरी घणैसनेह उ० ॥ ४ ॥ देवतणी पर विलसै भोग पांम्यौ पुन्य
तणै संजोग उ० । आणौ करिचाल्यौ श्रीपाल कटक सुभट दल बहुल विसाल उ० ॥ ५ ॥ सैन्य
चढाई कीध भूपाल चड़त नगारा थई करनाल उ० ॥ ६ ॥ देस देसना राय संजुत्त चलता माल

वमाहि पडुत्त उ०। उज्जेणी आयौ श्रीपाल वरसुष सांभलीयो भूपाल उ० ॥ ७ ॥ विणकणा कापड जलमाहे लीध गढ रोहो मालवपतिकीध उ०। सायर-वींटोलंकाजेम उज्जेणी वींटोरह्यौ तेम उ० ॥ ८ ॥ चिन्तातुर नगरीनो लोक अधिक उदासी रहै ससोक उ०। रातिपडी सबथयो अमाल चाल्यौ मायमिलण श्रीपाल उ० ॥ ९ ॥ समरै निसिपतिजे मचकोर मेहागम जिमचाहै मोर उ०। मधुकर आवै मालति दाइ मयण सुन्दरि तिम अधिक सुहाइ उ० ॥ १० ॥ सङ्ग अंते उरतेडी साथि निर्भय थई पुछतो वरनाथ उ०। माइ उघाडौ मन्दिर बार तुम्ह सेवक जिम करै जुहार उ० ॥ ११ ॥ उलसी मयण सुन्दरिनी देह बाई तुम्ह सुत साद्जएह उ०। झटकिउ-घार्याघरना बार मिलीया माय सुत विरह निवार उ० ॥ १२ ॥ लागी बहू सङ्घ सासू पाय

मयणासुं सगली मिली आय उ०। चमालीसमीढालै थयौ सुख कहै जिन हर्षटल्या सह्न दुख
उ०॥१३॥ दूहा॥ राति रहीनिय मन्दिरै जाया जणणी लेय। आयौ दिन अगाउ गतै निय
दल मांहि वलेह॥१॥ प्रात थयौ उगौ दिवस भाठ भणै कल्याण। सेनानी तेड़ाविनै भासै
दूण परिवाणि॥२॥ दूत मोकलीवेगसुं राय करावौ जांण। कंथकुहाड़ै आयमिलि जो राषै
निजप्रांण॥३॥ तौलसकर पाछै चलै रहै तांहरी मांम। आंणनमांनै माहरी तौकरि मुझ
सुं संग्राम॥४॥ सेनानी चर मौकल्यौ आव्यौ जिहां भूपाल। अम्हस्वामी बलीयौ हठी पर
तिष वयरी काल॥५॥ कंथकुहाड़ौ करिमिलै तौ पाछौ वलै कटक्कि। नहितौ गढ ढंढोलिस्यै
लेस्यै नगर झटक्कि॥६॥ ढाल ४५ बेबे मुनिवर विहरण पांगुर्‍या रे एहनी॥ दूतवयण सुणि

उज्जेणी धणी रे मनमां कीधो एह विचार रे। सबलासुं बलमांडीनै इथा रे कोण करावै लोक-संहार रे दू० ॥ १॥ कंध कुहाडौ करि अवनीपती रे सनमुष आवीनै ततकाल रे। चतुर सम-यनौ जाण प्रवीण तीरे भैंट्यौ महाराजा श्रीपाल रे दू० ॥ २ ॥ चंपापति आव्यौ तव सामुहौ रे सुसरानै दीधौ सनमांन रे। कंध कुहाडो दूरनषावीयौ रे बैठ बैठा पासै राजान रे दू० ॥ ३ ॥ संतोष्यौ सनमांन्यौ बहु परै रे मालवपति चिंतै मनमाहि रे। पार नदीसै एहनी रिद्धि नौ रे एहस्युं सरभर किम थाइ रे दू० ॥ ४ ॥ तात तुम्हे वर मुझ दीधो हुतो रे ते परितिष जोज्यौ ए आज रे। कंध कुहाडौ जेण न षावीयौ रे औखषि ज्यौ कुंवर महाराज रे दू० ॥ ५ ॥ मालवपति मनमा विसमय थयौ रे वपु वपु जोज्यौ अचरिज एह रे। पुन्यसरीषौ जग मै को नही रे एहनै

 फलीयो पुन्य अङ्कर रे दू० ॥ ६ ॥ सीपो नयणा निरषी हरषीया रे मिलिवा आव्या लोक अपार

 रे। सोहग सुंदरिनै रूप सुंदरी रे मिलिवा आव्यौ सज्ञ परिवार रे दू० ॥ ७ ॥ श्रीश्रीपाल नरेस

र तिणिसमै रे दीधौ नाटक नौ आदेस रे। नाटकछन्द बलावौ माहरौ रे जोवै सज्ञ नरनारि नरेस

रे दू० ॥ ८ ॥ नाटक आव्यौ तिहां मिलि नाचवा रे पहिरी सुंदर चरणाचीर रे। करालसता

कंचू हीयै कस्या रे सोहै भूषण सयलसरी रे दू० ॥ ९ ॥ एक नारी लाजै साजै नही रे ते

विण न पड़ै नाटक रंग रे। माही आंहे अबलाहाकनै रे उठाड़ी तेहनै मन भंग रे पु० ॥ १० ॥

नाटकिणी पेठी ते नाचिवा रे जोवा मिलिया रांणो रांण रे। दूहौ एक कह्यौ तिण

अवसरै रे मनमोहन मुष मधुरी वाणि रे दू० ॥ ११ ॥ दूहा। किहां मालव किहां संषपुर

किहां बब्बर किहां नट्ट। सुरसुंदर नचावीये दैवै दल्या मरट्ट ॥१॥ जाणी बाप श्रवण दूहो सुणी रे- कुंअरी भाचंतो नयणे- दीठ रे। नाटकणी थई सुरसुन्दरी रे स्युं कीधां देवै धीठ रे दू० ॥२॥ सहु को देषी- मनविस्मय थयौ रे हे हे जोवौ एहना कर्म रे। ढाल थईए पैतालीसमी रे कहै जिन-हर्षषरौ जिन-धर्म रे। दू० ॥१३॥ सर्वगाथा ७७५दूहा॥ सभामांहि जई कुमरिनै राणी कराउ विलग्ग। -बाभ असंभम देषिनै दुषतरिरोवा लग्ग॥१॥ राइ सुतानै पूछीयौ एस्युं तुझ सरूप। जोई परणाव्यौ ऊतौ तुभ मनमांन्यौ भूप॥२॥ वल तूं सुरसुन्दर कहै पिता सुनौ मुझ वात। परणीचाली कंतसुं संषपुर नगर दिषात ॥३॥ उतरीया तिहां जई करी रह्यावगड वडदीह।- साथ सहु घरमोकल्यौ बैठा रह्या अबीह॥४॥

मारि मारि करती तिहां आवीधाड़ि अपार। नासिगयौ सुभनाहलौ सुभमेलो निरधार ॥ ५ ॥
तिहां झाली सुभकोलीए वेची जई नैपाल। मोलदेई मालगिग्रह्यो तिणवेचो ततकाल ॥ ६ ॥
इम वेचाती अनुक्रमै इक विणजारै लीध। बब्बर देसै जाइनै गणिकानै घरदीध ॥ ७ ॥ ग-
णिका नाटकसीषव्यौ ऊं थई निपुण प्रवीण। नाटकिणी मांहि सरै कलाग्रही अकुलीण ॥ ८ ॥
ढाल ४६ मोरा साहिवहो एहनी। हिव बब्बर होनायक महाकालिक नाटकनो रसीयौ सही।
वैस्यानै होघरि नाटक साथिकि तेड़ी तिणि सज्ज संग्रही हि० ॥ १ ॥ दिन दिन प्रतिहो नाटक
नवरंग कि राय करावै नवनवा। परणावीहो कन्या निज भूपकि मयणसेना सुपनालिवा हि० ६२
॥ २ ॥ घण कंचण हो भूषण बहुदीधकि मयणापति श्रीपालनै। दीधावली हो नवनाटक इंद-

कि साथे सुभ निहालिनै हि० ॥ ३ ॥ मैकीधाहो नाटक बहुवारकि मयणापति आगै षडी। दूर्हां देषीहो मायबाप कुटंबकि लज्या दुषसायर पडी हि० ॥ ४ ॥ परणावीहो आडम्बर भूरकि मानषणौ सुभ बापनौ। सुप सगलाहो फीटीथया दुषकि फलपांम्यौ मै पापनौ हि० ॥ ५ ॥ सुभ बहिनीहो मयणा धनधन्नकि एसरिषी जगकी नही। दुष मिटीयाहो सुषपाम्या एहकि सील-फल्यौ एहनै सही हि० ॥ ६ ॥ कुलथांपणि होऊं यई कुलमांहिकि सहु पाणि माहि पापणी। मै सेव्यौ हो बहुभांति कुसीलकि लही कमाई आपणी हि० ॥ ७ ॥ सीदापुंहो सुभ कर्मनो वातकि तुम्ह आगलि हिवैडुं कहु। पातकनाहो पुन्यना मावापकि परतिषि फलदेषो सहू हि० ॥ ८ ॥ श्रीपालै हो अरदमण कुमार कि तेडाव्यौ आदर करी। घण कंचण हो आपो भर

 पूरिकि आमी वली सुरसुन्दरी हि० ॥ ९ ॥ सुर सुन्दरहो अरिदमण कुमारकि समकित पाम्यौ
 निरमलो। पूरबलीहो परथाप्यौ रायकि मति सागर मति ऊजलो हि० ॥ १० ॥ जे ऊंताहो
कोढीसय सातकि रोग गमी ठाकुर कीया। मोटांनाहो जोवो उपगारकि निज सरिषा करिथा
पीया हि० ॥ ११ ॥ नवरांणीहो पटराणी कीधकि श्रृङ्गार सुंदरीनी सषी। पांचे वलिहो चव-
दै ए नारिकि विलसै अपछर सारिषा हि० ॥ १२ ॥ नीसाणेहो हिव चलयो घायकि चंपा ऊपरि
चालीयौ। जिन हर्षेहो एतलो अधिकार कि ढाल छैताली समीकोयौ हि० ॥ १३ ॥ सर्वगाया
७८६ दूहा। कटका सुभट नाघट गरट मिलीया एका एक। सुसरा साला मावला रिणवा-
वला अनेक ॥ १ ॥ रिणरसीया कसीया जरद पहिर्‌या टोप करीट। बगतर पहिर्‌या लोहमय

आंणे कालाकीट ॥ २ ॥ पापरीयाहै वर प्रबल मद भरता गजराज। गयणांगण छायौ गिरद गोलानाल अवाज ॥ ३ ॥ इम चलतौ चंपापुरी आव्यौ नृप श्रीपाल। तडवायै नासीगयो अजित सेन ततकाल ॥ ४ ॥ राज लीयो निज भुजबलै बैठौ पितातषत्त। पामी परबल संपदा मोटोजा सनपत्त ॥ ५ ॥ लजाणौ राजा थयुं मन धरतौ-विषवाद। नासतां माहरौ थयौ लोकांविच अपवाद ॥ ६ ॥ अजितसेन मन चीतवै हूंहयौ द्रोहीयार। राजलीयौ भत्रीजनौ चीतवीयौ अपकार ॥ ७ ॥ गोलद्रोहयी जसनहीं नृपद्रोह नीत विणास। बालद्रोहयी गति नहीं लिखहै करया अभ्यास ॥ ८ ॥ हिवै दिखा जो आदरूं पालूं संयम सुद्ध। तो छूटूं एपापथी लूटै करम निरुद्ध ॥ ९ ॥ इम सुभभाव विचारता चढतां मन परणांम। ज्ञाना वरणी कर्मनो षयोपसम

थयो तांम ॥१०॥ ढाल ४७ हीडोलानी ॥ सुभभावना मन भावतां जाती स्मरण उतपन्न । दैववसै लीयौ संजम विसदजांणि रतन्न ॥ सुमति सूधी गुपति पालै दोष टालै दुष्ट । क्षमा सागर नमत मागर चतुर चारित्र करै पुष्ट ॥१॥ धन्नधन्न माई जे तनै इण परिक्रोध ॥ महा ग्यांनी महाध्यानी अभय दांनी जेह । भविकनै उपगार करतां चरण करण गुणगेह ॥ विच- रतां भूलोक ऊपरि अजितसेन मुणिन्द । आवीया चम्पा नयर अनुक्रमि लोकनै थयो आणन्द ध० ॥२॥ श्रीपाल सांभलि सुगुरु आगमि वांदिवा मनरङ्ग । आवीयौ आडम्बरें करि भाव भवगति अभङ्ग ॥ प्रदक्षिणा त्रिणहे देइ वन्दी बैठौ आगलि राय । देसना इक चित्तानि सुणै भाषै मुनिवर माय ध० ॥३॥ दोहिलोमां नव चतुर गति मांहि भवतां एह । देस आरिज्ञ

सुकुल उतपति सुगुरु सङ्गलहे ह । तत्वरुचि पिण दोहिली तिम श्रवण आगम वाणि । धर्म उद्यम छोडि आलस मांनव करै सुष हाणि ध० ॥ ४ ॥ धर्म नो संजोग पांमी कीजीयै जिन धर्म राज्य । लीला सकल सम्पति धर्मथी सिवधर्म देसणा मुनि राय दीधी ॥ सांभली चितलाय रायहिवै श्रीपाल पुछै कहो ज्ञानी मुनि राय ध० ॥ ५ ॥ किणै करमै बालरोगी ऊवौ किमनी रोग । रिद्धिपामी एतली किम डूम्बनो सयोग ॥ कीमसायर पड्यौ कुसले नीकल्यौ कहौ कीम । नारिपरख्यौ एह सुन्दरि न्यानी पूछ्यौ मुनि एम ध० ॥ ६ ॥ मुनि कहै सांभलि तुं नरेसर चतुर गति संसार । जीव कर्मै लहै सुप दुप जाणि जे निरधार ॥ करै जेहवा कर्म प्राणी तेहवा फल अन्त । तिण प्रं हिवै ताहरा न्रप साभलि कर्मवृत्तान्त ध० ॥ ७ ॥ इणै भरतै हिरण्य पुर

श्रीपा०च० वर सिरीकन्त नरेस। श्रीमती रांणी जगवषांणी दयापाल विसेस॥ राइ आषेटक निरन्तर
६५ भमे हणिवा जीव। नारि कहै प्रिय जीव हणतां पांमीयै दुष अतीव ध०॥ ८॥ बीहतानासै
विलामुषल्यै चवि न हणै तास। वारीयौ पिण कह्यौ न करें व्यसन लागौ जास॥ विंठ
लेई सातसै इक दिन आहेड़ै जाइ। गहन वनमै निजर पड़ीयौ षीणकाया मुनिराय ध०॥९॥
हाथओघौ देषि राजा कहै चामर धार। कोई कोढ़ी एहदीसै सहु कह्यौ तिण वार॥ यष्टि
मुष्टिकरीय ताड्यौ सातसै उल्लगठ। साधनै इम कष्टदीधौ चीकणी बांधी गठ ध०॥ १०॥ मुनि ६५
भणी उपसर्ग करिनै म्रगहणी सुष पाय। सात सयां वराठ उलगठ साथै आवीयौ घरराय॥ वली
इक दिन गयौ म्रगया एकलो नरनाह। नदी तटै इक साधु दीठौ नाषीयौ सलिल अगाह

घ० ॥ ११ ॥ नदी मांहे देषि दुषियौ थयौ करुणावन्त। नदी जलथी काढीयौ मुनि सुमतिवन्त
महन्त ॥ कह्यौ निजकृति नारि आगै रागिनी कहै एम। अवर जीवन पीडीये तो पीडीये
मुनिवर कैम घ० ॥ १२ ॥ साधुनी लाहानि थाये हास्य रोगी जांणि। निन्दा थको बधबन्धना
वलि ताडणाकि पिछाणि ॥ इम सुणी कांई कहीये आयौ धर्मनौ परणांम। ढाल सैतालीस
मी एघई जिन हर्षतमांम घ० ॥ १३ ॥ सर्वगाथा ८१८ ॥ दूहा ॥ दिवसे कितले कौगए गोषै बैठौ
भूप। मलिभूपति कृसकाय मुनि दीठौ एहवौ रूप ॥ १ ॥ सीष वयण गयौ वीसरी सेवकनै कहै
राय। नगरविटाल्यौ डूम्बडै कादो परौध काय ॥ २ ॥ तिण डरषे तिमहीज कर्यो यीमति
राणी दीठ। कोपकरी राजा प्रतै निर्भ्रंछै धिगधीठ ॥ ३ ॥ साधु भणी किम नन्दीये जेगि रूआ

गुणवन्त। तारि अपना आतमा परनै पिण तारन्त ॥ ४ ॥ ढाल ४८ धन२ श्रीरिषिराज अनाथी एहनी ॥ रांणीनै ओलंभै लाज्यौ एमै कीधो अकाजजी। बोधलता कायी पामीमे तेडाव्यौ रिष राजजी रां० ॥ १ ॥ नमी षमावी कीधी स्तवना श्रीमती कहै करजोड़िजी। भगवन रायै तुम्हनै दूहव्या तेह थकी हिवै छोड़िजी रां० ॥ २ ॥ मुनिभाषै पातिक रिषि घात. कि छूटै ते ततकाल जी। सिद्धचक्र आराधन करतां आंणी भावि विसाल जी रां० ॥ ३ ॥ श्रीमती रांणीनै राजायै आराध्यौ गुणिनिद्धि जी। रांणीनी जे आठ सहेली तिण अनुमोदन कीध जी रां० ॥ ४ ॥ तप पूरै उजमणौ कीधौ विंठनरैसै सात जी। धरमकांम न्टपना अनुमोद्यां सुभभावन विष्यात जी रां० ॥ ५ ॥ स्वामि वयण थी ते इक दिवसै सोहरायनै गांम जी। मांजीनै गोधण लेई वलीया

सीइकेडै थयौ तांमजी रा० ॥ ६ ॥ करि संग्राम हय्यासयसाते चवीं कुल उतपन्नजी। रिषि उपसर्ग थकी थया कुष्टी विगड्यौ सज्ञनौ तन्नजी रा० ॥ ७ ॥ पुन्य थकी श्रीपाल थयो तुं श्रीमती मयणा एहजी। पहिली पिण ताहरी हितवंछक इण भव परम सनेहजी रा० ॥ ८ ॥ मुनिनै जलपोडा उपजावी सायर पडीयौ तेणजी। डूम्ब कह्यौ ते डूम्ब कहाणौ कुष्टी वयण वसेणजी रा० ॥ ९ ॥ श्रीमती वयणे पूज्यौ पहिलो सिद्धचक्रगत पापजी। इण भव पिण मयणाने वयणे भागो सज्ञ सन्तापजी रा० ॥१०॥ रिद्धि लही सिद्धि चक्र पसाये आठ सहेलो जेहजी। अनमोदन थीएथई रांणी धरम तणा फल एहजी रा० ॥ ११ ॥ धर्म प्रसंसा थी सैसाते थया नोरोगी देह जी। सीह ग्रही व्रत अणसण अन्तै अजितसेन ज्ञं एहजी रा० ॥ १२ ॥ बालपणाथी राज्य

 लीयौ मै पूरव वैर सम्भारिजी। करम जिसा जीवै भोगवीयै ज्ञानी वचन रसालजी रा॰ ॥१३॥
 राजा सुणि चमक्यौ चितमाहे ऐऐ करम विरूपजी। ढाल थई अडतालीसमीए कहै जिन हर्ष अनूप जी रा॰ ॥१४॥ सर्वंगाथा ८३७॥ दूहा॥ राय कहै सुणि साधुजी दिख्या सगतिन मुझ। जे जांणौ मुझ जोग्यता ते कहौ पूछूं तुझ॥१॥ नवपदे ए आराधिस्युं सात्तो गति विधि जोग। एथी सझ सुष पांमिस्यौ लहिस्यौ उत्तम भोग॥२॥ सझ ए नरसुर भवकरी भोगवि अनुपम सुख। नवमै भववल तौसही सहिस्यौ अविचल सुख्ख॥३॥ टाल ४९ दूम
धन्नौ धणनै परचावै एहनी॥ इण परि साधु तणी सुणि वाणी हरष्या राजा रांणीजी। आ-राधै जलट मन आंणी सिद्धचक्र गुण षांणीरे इ॰॥१॥ श्रीनवकार गुणै सुभभावे जिनवर पूज

रचावैजी। जैन धरमसुं निज चित लावै जीर्णोद्धार करावैरे इ० ॥ २ ॥ सामा इक पोषध व्रत पालै कुमति कदाग्रह टालैरे। श्रीजिनवर मारग उजवालै पाप थकी मनवालैरे इ० ॥ ३ ॥ इण परिरिद्धि चक्र आराधी चढती सुरगति वाधीरे। इण भव पिण एहवी रिधि लाधी कोरति त्रिभुवन वाधीरे इ० ॥ ४ ॥ राजा राणी माइ संजुत्ता समकित गुण सुभचित्तरे। आउ पूर्ण कर सुरग पुहत्ता पांम्या भोग समत्ताजी इ० ॥ ५ ॥ तिहांथकी चविनर भव पांमो मयणा सुन्दरि सुपकन्दारे। पाली जिनवर आण अमन्दा काप्या भवना फन्दाजी इ० ॥ ६ ॥ धनजगमैं श्रीपाल नरिन्दा मयणा सुन्दरि सुपकन्दाजी। पाली जिनवर आण अमन्दाजी काप्या भव२ फन्दाजी इ० ॥ ७ ॥ इम श्रीपाल चरित्र मनरागै श्रेणिक जिनवर आगैरे। कह्यौ गोतम गण

हर वड़भागै सांभलितांमति जागैरे इ० ॥ ८ ॥ इम जांणी नवपदसुं राता सिद्धिचक्र जे ध्या॰
तारे। न्टप श्रीपाल तणी परिमाता रहैं सदा सुतसातारे इ० ॥ ९ ॥ संवत सतरै से चालीसे चैचा
दिक सुजगीसैरे। सातिम सोमवार सुभदीसै पाटण विसवावीसैरे इ० ॥ १० ॥ श्रीपरतर गच्छ
महिमाधारी जिनचन्द सूरपट्टधारीरे। शान्ति हरष वाचक सुषकारो तास सीस सुविचारीरे इ०
॥११॥ कहै जिन हरष भविक नर सुणिज्यौ नवपद महिमा थुणिज्यौरे। उगण पचासे ढाले
गुणिज्यो निज पातक वन लुणिज्यौरे इ० ॥ ११ ॥ सर्वगाथा १२२५ ढाल सर्वमिलकै संख्या अङ्क ॥ ९८
ढाल ४९ ॥ इति श्रीसिद्धचक्रमहिमापरि श्रीश्रीपाल महाराय चतुष्पदिका समाप्ता ॥

रिसहजिणे सरसो जयो मङ्गलकेलि निवास। वासव-वन्दियपय कमल त्रिजगजन पूरव आस॥१॥ ढाल॥ चन्दकुलंवर पूनिमचन्द वन्दो श्रीजिण कुशल सुणिन्द। नाम मन्त्रज सुमहिम निवास जो सुमरैं तसु पूरवै आस॥२॥ मरूमण्डल समीयांणो गाम धणकण कञ्चण अति अभिरांम। तिहां निवसैं जेलहागर मन्त्रि ज्योति श्री तसु घरणि पवित्र॥३॥ जसुतेरै सैंतीसैं जम्म सैंताले सिरि संयम रम्म। पाटणिसतहो तरैज सुपाट निव्यासीयैं तसु स्वर्ग वाट॥४॥ भूमण्डल सुरगइ पाया सचिराचर जगिदुणि कलिकाल। प्रभु प्रतापन विमांनै जोइ मैंन विनयणेंदीठो कोइ॥५॥ निरधन लहै धनधन्न सुवन्न पुन्नहीण-पांमै बहुपुन्न। असुखी पामै सुखसन्तान एकतनां गुरुकरतां ध्यांन॥६॥ प्रभु सुमरण आपद सविटलै श्रेय सान्ति सुख

 सम्पति मिल। आधिव्याधि चिन्तासन्ताप सविछांडी नऊमंडै व्याप ॥ ७ ॥ पाप दोष नवि-
 लागै तिहां प्रभुदरसण उल्लासथातिहां। सेवंता सुरतरुनी छांहि निश्चैदालिद्रमेह्लै वांहि ॥ ८ ॥
विसहर विसनिरवंस नरनाह भूतप्रेत ग्रह विन्तरराह। प्रभुनांमै जेन करै पीड भांजै भावट
भवभय भीड ॥ ९ ॥ रोग सोग स विनासै दूर अन्धकार जिम ऊगै सूर। मरण कोटी पणिडत
थाय प्रभु प्रताप दुखदुरीय पुलाय ॥ १० ॥ धन धन जिन सासन सुद्योत जिहां अछै भवसायर
पोत। सो सदगुरुमें भेट्यो आज रलीय रंग सहूसीधा काज ॥११॥ ढाल ॥ आजघर आंगण
सुरतरु फलोयो चिन्तामणि करकमलै मिलीयो। उदयौ परमानन्द करै आज दीहमें धन्यें
गिणीयो। जुग भव राग मजोमें थुणीयौ चन्द्र गच्छ महिमा निलौए ॥ १२ ॥ कांई करो एथुी-

पति सेवा काँई मनावौ देवी देवा चिन्ता आणौ कोंइ मनें। वार२ एकवित भणीजै श्रीजिन कुशलसूर समरीजै सरै काज आयास मनो ॥ १३ ॥ संवत चवद इक्यासी वरसें मुलक वाहण पुरवर मन हरसें अजिय जिणेसर परि भवणे। कीयौ कवित्त ए मङ्गल कारण विघन हरन वङ्क पाप निवारण कोई मने संसय धरौ मने ॥ १४ ॥ जिम२ सेवे सुरनर राया श्रीजिन कुशल मुनी सरपाया जय सागर उवभाय घुणै। इम जे भागर गुण अभिनन्दै रिद्धि सम्द्धि जे चिर नन्दै मनवंछित फल सुभ हुवौए ॥ १५ ॥ इति श्रीजिन कुशलसूरि स्तवनं ॥